



facebook.com/
thebharatshri



twitter.com/
thebharatshri



website
thebharatshri



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्रि

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक



आखिर शुभमन गिल को...

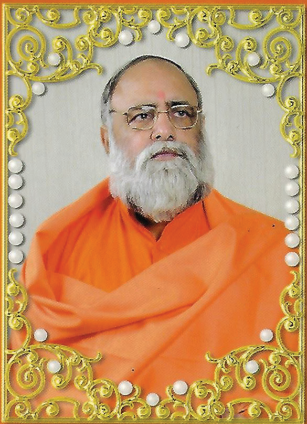
सोमवार, 26 मई 2025 • वर्ष 6 • अंक 44 • मूल्य: 5 रुपए



पूज्य सद्गुरुदेव जी ने इस कल्पतरु के विषय में कहते हुए भावविभोर होकर कहा, “रुम शरीर को काट सकते हैं, आत्मा को नहीं। आत्मा, परमात्मा का अंश है, जिसे कोई अस्त्र-शस्त्र काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, वायु सुरक्षा नहीं सकती।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



इस जगत में जो भी दुख व्याप्त है वह सब परमात्मा को भूलने से है। परमात्मा एक ऐसी नाम औषधि है जिसके करने से व्यक्ति अपने सभी दुखों और रोगों से मुक्त हो जाता है।

शास्त्रों को पकड़ने और उसमें डूबने के साथ आप शास्त्रों की बात मानें। शब्दावली के साथ शास्त्रों के मूल भाव को जानें।

यदि हम किसी धर्मशास्त्र का अपमान करते हैं तो इसका मतलब हुआ हमने अपने परमात्मा का अपमान किया है।

बहरीन में ओवैसी का पाकिस्तान पर तीखा हमला FATF की ग्रे लिस्ट में डालने की मांग

@ भारजश्री ब्यूरो

बहरीन में आयोजित एक बहुपक्षीय संवाद कार्यक्रम में एआईएमआईएम प्रमुख और सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने पाकिस्तान पर कड़ा हमला बोलते हुए उसे “फेलियर स्टेट” करार दिया। उन्होंने कहा कि भारत अब आतंकवाद पर चुप नहीं बैठेगा, और भविष्य में पाकिस्तान की किसी भी आक्रामक कार्रवाई का जवाब उनकी उम्मीदों से कहीं अधिक कठोर होगा।

ओवैसी, भाजपा सांसद बैजयंत पांडा के नेतृत्व में बहरीन पहुंचे एक सर्वदलीय भारतीय प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा हैं। इस डेलिगेशन में भाजपा सांसद निशिकांत दुवे, एनजेपी की सांसद रेखा शर्मा, गुलाम नबी आजाद, सांसद सतनाम सिंह संधू और राजदूत हर्षवर्धन श्रृंगला सहित कई वरिष्ठ नेता शामिल थे।

पाकिस्तान पर किया तीखा हमला

ओवैसी ने कहा, “हमारी सरकार, हमारी तकनीक, हमारी वायु रक्षा प्रणाली ने पाकिस्तान जैसे फेलियर स्टेट द्वारा भेजे गए ड्रोन्स और मिसाइल्स को सफलतापूर्वक निष्क्रिय किया। सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि अगली बार पाकिस्तान ऐसा दुस्साहस करेगा, तो भारत की प्रतिक्रिया उनकी कल्पना से भी अधिक शक्तिशाली होगी।”

FATF में दोबारा शामिल किया जाए पाकिस्तान

ओवैसी ने बहरीन सरकार से अपील की कि पाकिस्तान को वित्तीय कार्रवाई कार्यबल (FATF) की ग्रे लिस्ट में फिर से शामिल किया जाए। उन्होंने कहा कि “पाकिस्तान के आतंकवादी संगठनों को फंडिंग की निगरानी जरूरी है। यह पैसा आतंकवादियों के हाथ में जा रहा है और निर्दोष लोगों की जान ले रहा है।”

“देश की सुरक्षा पर कोई मतभेद नहीं”

ओवैसी ने कहा कि भारत में राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं, लेकिन जब राष्ट्रीय सुरक्षा और एकता की बात आती है, तो पूरा देश एकजुट हो जाता है। हम सभी दल



जिक्र किया, जिसमें 26 निर्दोष नागरिक मारे गए थे। उन्होंने कहा, पाकिस्तान जब तक आतंकियों को समर्थन देता रहेगा, तब तक यह खतरा बना रहेगा। हमें इस हिंसा की मानवीय त्रासदी को समझना चाहिए।

भारत की स्थिति दुनिया को बताना डेलिगेशन का उद्देश्य

डेलिगेशन का उद्देश्य दुनिया को यह बताना है कि भारत को किस तरह आतंकवाद का सामना करना पड़ा है और अब भी हो रहा है। ओवैसी ने कहा, हम यहां दुनिया को यह दिखाने आए हैं कि भारत संयम बरतते हुए अपनी रक्षा में किस तरह मजबूत बना है। बहरीन से आया यह संदेश स्पष्ट है, भारत अब आतंकवाद को लेकर सख्त रुख अपनाने को तैयार है और विश्व समुदाय से उम्मीद करता है कि वह पाकिस्तान जैसे देशों के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बनाए। ओवैसी का बयान भारतीय राजनीतिक नेतृत्व की एकजुटता और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की स्थिति को दृढ़ता से रखने की दिशा में अहम माना जा रहा है।

एक स्वर में पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद की निंदा करते हैं। बातचीत के दौरान ओवैसी ने 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का भी



ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



NDA शासित 19 राज्यों के मुख्यमंत्रियों से मिले प्रधानमंत्री मोदी बताया जाति जनगणना का मकसद



@ रिकू विश्वकर्मा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में रविवार को दिल्ली में भाजपा और एनडीए शासित 19 राज्यों के मुख्यमंत्रियों और उपमुख्यमंत्रियों की एक उच्चस्तरीय बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में गृहमंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित अन्य वरिष्ठ नेता भी शामिल हुए। चार घंटे से अधिक चली इस बैठक में जातिगत जनगणना, आतंकवाद के खिलाफ 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता, सुशासन की रणनीतियां और आगामी राष्ट्रीय कार्यक्रमों की तैयारी जैसे मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

सामाजिक न्याय की दिशा में कदम

प्रधानमंत्री मोदी ने बैठक में कहा कि जातिगत जनगणना उनकी सरकार के उस विकास मॉडल की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है, जिसका उद्देश्य समाज के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों को मुख्यधारा से जोड़ना है। बैठक के दौरान इस विषय पर प्रस्ताव पारित किया गया, जिसे सभी मुख्यमंत्रियों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा, "हम जाति की राजनीति नहीं करते, हमारा उद्देश्य है वंचित, पीड़ित और शोषित वर्गों को ताकत देना।"

गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने 30 अप्रैल को जाति आधारित जनगणना कराने की घोषणा की थी। यह जनगणना 2021 में प्रस्तावित थी, लेकिन कोविड महामारी के कारण स्थगित कर दी गई थी। नई जनगणना की प्रक्रिया सितंबर 2025 से शुरू हो सकती है और इसे पूरा होने में एक वर्ष तक का समय लग सकता है।



आत्मनिर्भर भारत की रक्षा नीति सफल

प्रधानमंत्री मोदी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि यह आत्मनिर्भर भारत की सैन्य क्षमताओं का प्रमाण है। इस ऑपरेशन के तहत भारतीय सेना ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए

सैन्य आत्मनिर्भरता का बड़ा संकेत है।"

जेपी नड्डा ने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर पर भी सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया। बैठक में कहा गया कि "देश की सुरक्षा सर्वोपरि है और भारत हर प्रकार की आतंकवादी चुनौती का माकूल जवाब देने में सक्षम है।"

गुड गवर्नेंस और आने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा तय

बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने भाजपा-एनडीए शासित राज्यों को सुशासन और पारदर्शी प्रशासन पर विशेष ध्यान देने की अपील की। उन्होंने राज्यों से सीधे जुड़ने और कल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने की बात कही।

भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करते हुए यह निर्णय लिया गया कि मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का एक वर्ष पूरा होने पर जमीनी उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के 10 वर्ष पूरे होने पर विशेष आयोजन किए जाएंगे। देश में आपातकाल के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लोकतंत्र के महत्व को उजागर करने वाले कार्यक्रम किए जाएंगे।

राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक समरसता और सुशासन भाजपा की प्राथमिकता

यह बैठक प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में एनडीए शासित राज्यों के समन्वय और साझा विकास की दिशा में एक निर्णायक कदम मानी जा रही है। भाजपा नेतृत्व ने यह संदेश दिया कि देश की सुरक्षा, सामाजिक न्याय और पारदर्शी शासन—इन तीन स्तंभों पर केंद्र सरकार और भाजपा-शासित राज्य सरकारें पूर्ण निष्ठा से कार्य कर रही हैं।

आतंकी हमले के जवाब में पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (PoK) में स्थित आतंकी ठिकानों को सफलतापूर्वक निशाना बनाया। पीएम ने कहा, "स्वदेशी रक्षा तकनीकों की मदद से भारतीय सेना ने दुश्मन के ड्रोन और मिसाइलों को सटीकता से नष्ट किया। यह भारत की



@ अंकित कुमार

देश में एक बार फिर से कोरोना वायरस के मामलों में बढ़ोतरी देखी जा रही है। राजस्थान के बाड़मेर जिले में दो महीने की एक बच्ची के कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद प्रदेश में अब तक कुल संक्रमितों की संख्या 15 हो गई है। वहीं, पूरे देश में एक्टिव केस की संख्या 312 पार कर गई है। कोरोना के नए वैरिएंट JN.1 और उसके सब-वैरिएंट्स LF.7 व NB1.8 के चलते चिंता बढ़ गई है।

अहमदाबाद में एक दिन में 20 नए केस, यूपी-हरियाणा में भी तेजी

शुक्रवार को गुजरात के अहमदाबाद में कोरोना के 20 नए केस दर्ज किए गए। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में 4, हरियाणा में 5 और बंगलुरु में 9 महीने का एक बच्चा पॉजिटिव पाया गया। इसके साथ ही देशभर में अब तक इस सीजन में दो मौतें भी दर्ज की जा चुकी हैं। गुजरात में कुल 40 मामलों में से 33 अभी भी एक्टिव हैं। अहमदाबाद के सोला सिविल अस्पताल में एक 20 वर्षीय युवती को भर्ती किया गया है, जबकि अन्य सभी मरीज होम आइसोलेशन में हैं।

दिल्ली सरकार ने एडवाइजरी जारी की

दिल्ली सरकार ने बढ़ते मामलों को देखते हुए सभी अस्पतालों को सतर्क रहने का निर्देश दिया है। अस्पतालों को ऑक्सीजन, दवाइयों और बेड की पर्याप्त व्यवस्था रखने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही हर पॉजिटिव केस का सैंपल जीनोम सीक्वेंसिंग के लिए लोक नायक अस्पताल भेजने को कहा गया है। राजधानी में गुरुवार तक कुल 23 केस रिपोर्ट हुए हैं, जबकि दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री पंकज सिंह ने बताया कि अब तक 100 से अधिक संक्रमित मरीज सामने आ चुके हैं।

हरियाणा में अलर्ट, PGI रोहतक में रिजर्व किए गए बेड

हरियाणा में पिछले 48 घंटों में 5 नए मरीज सामने आए हैं। इनमें दो महिलाएं शामिल हैं। सभी की कोई भी इंटरनेशनल ट्रैवल हिस्ट्री नहीं पाई गई है। रोहतक स्थित पीजीआई में 10 बेड कोरोना मरीजों के लिए आरक्षित कर दिए गए हैं। स्वास्थ्य मंत्री आरती राव ने लोगों से अपील की है कि भीड़-भाड़ वाली जगहों पर न जाएं और मास्क पहनना शुरू करें।

नया वैरिएंट JN.1: कितना खतरनाक है ?

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, इस बार कोरोना के मामलों में तेजी ओमिक्रॉन के सब-वैरिएंट JN.1 के कारण देखी जा रही है। यह वैरिएंट पहली बार अगस्त 2023 में सामने आया था। दिसंबर में WHO ने इसे 'वैरिएंट ऑफ इंटरेस्ट' घोषित किया

था। अमेरिका की जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी के मुताबिक, JN.1 पहले के वैरिएंट्स की तुलना में तेजी से फैलता है लेकिन यह घातक नहीं है। हालांकि, यह कमजोर इम्यूनिटी वाले लोगों को ज्यादा प्रभावित कर सकता है।

JN.1 के लक्षण क्या हैं ?

बुखार और खांसी
गले में खराश
थकान और सिरदर्द
स्वाद और गंध में कमी
लंबे समय तक बने रहने वाले लक्षण (लॉन्ग कोविड की आशंका)

विशेषज्ञों का कहना है कि अगर लक्षण लंबे समय तक बने रहते हैं, तो यह लॉन्ग कोविड की निशानी हो सकती है, जिसकी गंभीरता को कम नहीं आंका जाना

चाहिए।

सरकार और विशेषज्ञ क्या सलाह दे रहे हैं ?
टीकाकरण और बूस्टर डोज़ लगवाएं
भीड़भाड़ से बचें
मास्क पहनें और हाथों की नियमित सफाई करें
लक्षण दिखने पर टेस्ट कराएं और आइसोलेट करें
बुजुर्गों और बच्चों का विशेष ध्यान रखें
दिशा-निर्देशों का पालन करना बेहद जरूरी
कोरोना के नए मामलों में फिर से उछाल आना चिंता की बात है, खासकर तब जब नया वैरिएंट कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले लोगों पर असर डाल सकता है। हालांकि, सरकार और स्वास्थ्य विभाग सक्रिय हैं और स्थिति पर नजर रखे हुए हैं। ऐसे में आम जनता को भी सतर्क रहकर दिशा-निर्देशों का पालन करना बेहद जरूरी है।



भारत का कानूनी बाजार

परंपरा और वैश्वीकरण का दौरा

कानून का पेशा, भारत में, हमेशा से एक मिशन रहा है। यह केवल नौकरी नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने वाला एक धागा है, जो न्याय और नैतिकता की नींव पर खड़ा है। लेकिन आज, यह पेशा एक दौरा पर खड़ा है। 2023 में बार काउंसिल ऑफ इंडिया (BCI) ने नए नियम बनाए, जिन्होंने विदेशी वकीलों और लॉ फर्मों को भारत में विदेशी और अंतरराष्ट्रीय कानून की प्रैक्टिस करने की इजाजत दी। यह बदलाव एक नई शुरुआत है, या शायद एक खतरा? यह कहानी है एक युवा वकील की, एक पुराने जमाने के सीनियर एडवोकेट की, और एक छोटे लॉ फर्म के मालिक की, जो इस नए दौर में अपनी जगह तलाश रहे हैं। आइए, इस बदलते कानूनी बाजार की सैर करें, जहाँ परंपरा और वैश्वीकरण की टक्कर हो रही है।

नया दौर, नई उम्मीदें: वैश्वीकरण का स्वागत

मुंबई के एक चमकता ऑफिस में, 25 साल की नेहा, एक फ्रेश लॉ ग्रेजुएट, अपने लैपटॉप पर एक इंटरनेशनल लॉ फर्म की वेबसाइट देख रही है। उसकी आँखों में चमक है—वह सपना देख रही है लंदन या न्यूयॉर्क में ट्रेनिंग का, जहाँ वह क्रॉस-बॉर्डर डील पर काम करेगी। BCI के 2023 नियमों ने नेहा जैसे लाखों युवा वकीलों के लिए दरवाजे खोले हैं। अब विदेशी फर्म भारत में ऑफिस खोल सकती हैं, बशर्ते वे भारतीय कानून या कोर्ट में प्रैक्टिस न करें। यह नियम 1961 के एडवोकेट्स एक्ट को तोड़ता है, जो विदेशी वकीलों को भारत से दूर रखता था।

लेकिन यह कोई नई बात नहीं। विदेशी फर्म पहले भी “फ्लाइ-इन, फ्लाइ-आउट” मॉडल या “बेस्ट-फ्रेंड” रेफरल्स के जरिए भारत में काम करती थीं। नए नियम बस इसे पारदर्शी बनाते हैं।

भारत के 14 लाख वकीलों और 1200 लॉ स्कूलों के बीच, यह बदलाव एक मौका है—नए जॉब्स, बेहतर ट्रेनिंग, और

ग्लोबल एक्सपोजर। कॉर्पोरेट क्लाइंट्स को अब ज्यादा ऑप्शंस मिलेंगे, जैसे 1990s में मल्टीनेशनल अकाउंटिंग फर्म के आने से बिजनेस को फायदा हुआ था।

फिर भी, नेहा के मन में एक सवाल है: क्या यह मौका सबके लिए है? ज़िंदगल ग्लोबल लॉ स्कूल जैसे इलीट कॉलेजों में कोडिंग और इंटरनेशनल लॉ की पढ़ाई होती है, लेकिन छोटे शहरों के लॉ स्कूलों में यह सुविधाएँ कहाँ? क्या वैश्वीकरण केवल अमीर और टॉप-टियर वकीलों के लिए है? यह सवाल हमें एक गहरे दर्शन की ओर ले जाता है: क्या कानून का पेशा अब सिर्फ पैसा कमाने का जरिया बन जाएगा, या यह समाज के लिए अपनी नैतिक ज़िम्मेदारी निभाएगा?

पुरानी सोच, नया डर: परंपरा का संघर्ष

दिल्ली के एक पुराने चैंबर में, 60 साल के सीनियर एडवोकेट रमेश शर्मा अपनी पुरानी कुर्सी पर बैठे, BCI के नियमों पर गुस्सा फूट रहे हैं। “यह हमारी संप्रभुता पर हमला है!” वह कहते हैं। रमेश जैसे सीनियर वकीलों और सोसाइटी ऑफ इंडियन लॉ फर्म (SILF) का मानना है कि विदेशी फर्म भारतीय कानूनी बाजार को “हड़प” लेंगी। उनके लिए, कानून सिर्फ प्रोफेशन नहीं, बल्कि एक पवित्र ड्यूटी है—न्याय की रक्षा करना, गरीबों के लिए प्रो बोनो केस लड़ना।

लेकिन क्या यह डर जायज़ है? लेख के मुताबिक, आम भारतीय नागरिक पर इस बदलाव का कोई खास असर नहीं होगा, क्योंकि वे ज्यादातर लोकल कोर्ट्स और वकीलों से डील करते हैं। फिर भी, रमेश का गुस्सा सिर्फ संप्रभुता का नहीं—यह पावर का सवाल है। बड़े भारतीय लॉ फर्म, जो पहले से ही कॉर्पोरेट स्टाइल में काम करते हैं—प्रॉफिट शेयरिंग, मार्केटिंग, एक्सपेंशन—वे भी डरते हैं कि ग्लोबल फर्म उनकी मार्केट शेयर छीन लेंगी।

यह है एक दार्शनिक

सवाल उठता है: क्या कानून को बिजनेस की तरह देखना गलत है? भारतीय फर्म पहले से ही बिलिंग टारगेट्स और ग्रोथ प्लान्स पर काम करती हैं। फिर विदेशी फर्म से डर क्यों? शायद यह डर परंपरा और आधुनिकता की टक्कर है—एक पुरानी सोच, जो बदलाव से डरती है, बनाम एक नया दौर, जो ग्लोबल दुनिया में शामिल होना चाहता है। लेकिन अगर यह टक्कर अनियंत्रित रही, तो छोटे फर्म और MSMEs (6.3 करोड़ से ज्यादा) पीछे छूट सकते हैं, जो पहले से ही लीगल सर्विसेज की कमी से जूझ रहे हैं।

भविष्य की राह: अवसर या असमानता?

बेंगलुरु में, एक छोटे लॉ फर्म के मालिक, 35 साल के राहुल, अपने ऑफिस में बैठे, एक नया सॉफ्टवेयर, लॉ बॉट प्रो, टेस्ट कर रहे हैं। यह लीगल टेक टूल उनके क्लाइंट्स—छोटे स्टार्टअप्स और MSMEs—के लिए कॉन्ट्रैक्ट्स और कम्प्लायंस को आसान बनाता है। राहुल जैसे वकील इस बदलाव में एक मौका देखते हैं। विदेशी फर्म भले ही बड़े कॉर्पोरेट क्लाइंट्स को टारगेट करें, लेकिन भारत के 6.3 करोड़ MSMEs को सस्ती, लोकल लीगल सर्विसेज चाहिए। यहाँ भारतीय फर्म अपनी जमीन बना सकती हैं।

लेकिन चुनौतियाँ भी हैं। विदेशी फर्म के पास ज्यादा पैसे और रिसोर्सेज हैं। अगर वे टॉप टैलेंट को “पिक” कर लें, तो मिड-टियर लॉ स्कूलों के स्टूडेंट्स पीछे रह जाएँगे। फिर, नैतिकता का सवाल है। विदेशी फर्म शायद प्रो बोनो या पब्लिक इंटेरेस्ट केसेज से बचें, जो भारतीय वकील अक्सर करते हैं। इंदिरा जयसिंह की टिप्पणी याद करें—कानूनी पेशे में यौन उत्पीड़न जैसे “छिपे गंदे रहस्य” पहले से ही इसकी नैतिक

साख को चोट पहुँचाते हैं। क्या वैश्वीकरण इसे और बिगाड़ेगा?

यहाँ एक गहरी सच्चाई है: कानून का पेशा केवल कानून नहीं, बल्कि समाज का आईना है। अगर वैश्वीकरण असमानता बढ़ाता है—चाहे जेंडर, क्लास, या इकनॉमिक—तो यह पेशा अपनी आत्मा खो देगा। लेकिन अगर सही ढंग से मैनेज किया जाए, तो यह भारत को ग्लोबल लीगल मार्केट में ला सकता है। इसके लिए जरूरी है:

लीगल एजुकेशन रिवॉर्म: लॉ स्कूलों में ग्लोबल लॉ, टेक, और कोडिंग पढ़ाई जाए। छोटे कॉलेजों को फंडिंग मिले, ताकि असमानता न बढ़े।

छोटे फर्म का सपोर्ट: BCI को सब्सिडी और ट्रेनिंग प्रोग्राम्स देना चाहिए, ताकि छोटे फर्म MSMEs को सर्व करें।

नैतिकता की रक्षा: सभी फर्म—भारतीय और विदेशी—के लिए प्रो बोनो और डायवर्सिटी पॉलिसीज़ अनिवार्य हों।

एक नई शुरुआत या अंत?

नेहा, रमेश, और राहुल—तीनों इस दौरा पर खड़े हैं। नेहा का सपना है ग्लोबल स्टेज, रमेश की चिंता है परंपरा की रक्षा, और राहुल की कोशिश है अपने छोटे फर्म को बचाना। यह कहानी सिर्फ वकीलों की नहीं—यह भारत की कहानी है, जो ग्लोबल दुनिया में अपनी जगह बना रहा है। क्या हम वैश्वीकरण को गले लगाएँगे, या अपनी जड़ों को मजबूत करेंगे? क्या कानून का पेशा समाज की सेवा करेगा, या सिर्फ प्रॉफिट की दौड़ बनेगा?

यह सवाल हम सबके लिए है। एक वकील, क्लाइंट, या आम नागरिक के तौर पर, हम इस बदलाव का हिस्सा हैं।

आइए, इस दौरा पर खड़े होकर सोचें: हम कैसा कानूनी भविष्य चाहते हैं?



नैतिकता या नाटक?

लालू प्रसाद यादव को वर्तमान भारत का सबसे अधिक चालाक नेता माना जाता है। लालू यादव सरीखे नाटक बाज नेता वर्तमान भारत में नहीं है। किस सफाई से इस नाटक बाज ने अपने बेटे को नैतिकता के आधार पर पार्टी से निकाल दिया। लालू प्रसाद के मुंह से नैतिकता की दुहाई सुनकर वास्तव में नैतिकता का अपमान महसूस होता है। आप विचार करिए की तेज प्रताप यादव में किसी भी प्रकार की सामाजिक या राजनीतिक योग्यता नहीं थी यह बात बचपन से लालू जानते थे और यही समझ कर लालू ने तेज प्रताप की जगह अपने छोटे बेटे तेजस्वी को आगे बढ़ाना शुरू किया। यह उनके पारिवारिक मामला था लेकिन किस नैतिकता के आधार पर लालू प्रसाद ने तेज प्रताप यादव को बिहार का एक जिम्मेदार मिनिस्टर बना दिया। बिहार जैसे प्रदेश पर अपने खानदान के अपने बेटे को जिस बेशर्मी से लालू प्रसाद ने थोप दिया उसमें लालू प्रसाद की कितनी नैतिकता थी और कितना स्वार्थ। आज लालू जी नैतिकता की बात कर रहे हैं। वह नैतिकता उस समय कहां चली गई थी जब रेलवे मिनिस्टर रहते हुए यही लालू खुलेआम भ्रष्टाचार कर रहे थे लालू की नैतिकता कहां चली गई थी जब इसी लालू यादव ने रेल मंत्री रहते हुए कार सेवकों की हत्या को दुर्घटना सिद्ध करने की कोशिश की थी लालू की नैतिकता कहां चली गई थी जब लालू यादव ने भ्रष्टाचार के आधार पर सजा भोगी। आज यह नाटक बाज नैतिकता की बात कर रहा है। नैतिकता का उत्तर तेज प्रताप को नहीं लालू प्रसाद को देना चाहिए। तेज प्रताप ने जो गलतियां की हैं वह शारीरिक भूल थी चालाकी और धूर्तता नहीं लालू प्रसाद ने जो गलतियां की हैं वह धूर्तता है। कल जिस तरह रोते हुए तेजस्वी यादव टीवी पर दिख रहे थे उससे यह सिद्ध हुआ कि तेजस्वी वास्तव में लालू का ही विस्तार है और पूरे समाज के साथ धोखा है और मैं स्पष्ट कर दूं कि मूर्खता की तुलना में धूर्तता समाज के लिए अधिक घातक होती है।

बजरंग मुनि

(प्रख्यात विचारक, समाज विज्ञानी)

गांधी का देश और युद्ध की अनिवार्यता

@ नितिन

बुद्ध, महावीर, ओशो और कई चिंतकों ने घोषणा की थी कि उन्हें ज्ञान मिल गया। इस "ज्ञान" को किसी ने निर्वाण कहा तो किसी ने कैवल्य। अपनी कोई हैसियत नहीं कि तय कर लें एकचुली ज्ञान प्राप्त किए व्यक्ति को क्या महसूस होता है, मगर एक बार कहीं कायदे की जगह पड़ा था (जगह भी अब याद नहीं) कि ज्ञान या आत्मसाक्षात्कार में अलग से कुछ नहीं होता बस आपके थॉट्स में क्लैरिटी आ जाती है। इसका मतलब कि जो अलग अलग तरह के विचार आपकी खोपड़ी में कौंधते हैं और एक दूसरे को काटते हैं वो आपको किसी एक निष्कर्ष पर पहुंचने नहीं देते। जिस दिन विचार तारतम्य में बैठ गए तो लॉजिक साफ हो जाता है। दूसरे उदाहरण में- टुकड़ों में बंटी तस्वीर को कितनी बार पूरा कीजिए मगर कोई एक टुकड़ा गायब मिलेगा। जैसे ही सब साथ आए, तस्वीर बनी और हो गई ज्ञान प्राप्ति।

अब इंसान ठहरा बहती नदी। विचार बने, बिगड़े, संशोधित हुए, संवर्धित हुए.. कोई निष्कर्ष निकला.. फिर वो बिगड़ गया। इसी रेलमपेल को देख गांधी जी ने अपने जीवन को प्रयोग कहा। कई लोगों को शिकायत रही कि आप तो विचार बदल लेते हैं। कभी कुछ कहते हैं तो कभी कुछ और। गांधी ने उनकी ये समस्या दूर कर दी। कहा, मैं विचार परिवर्तन करता हूं ये ठीक बात है। व्यक्ति निरंतर सीखता है इसलिए ऐसा होना स्वाभाविक है। आप लोग ऐसे में भ्रमित ना हों। सरल ये रहेगा कि जो बात पहले कही हो उसे बाद में कही बात से बदल लें, यानि बाद में कही बात को ठीक मान लें। हालांकि इसकी गारंटी नहीं कि जो आज कहा है वो कल भी कहूं। कौन जाने कल मेरे इल्म में क्या बढ़ जाए! मैं किस बात को गलत समझने लगूं और किसे सही।

तो सीधा मामला है जीवन में क्लैरिटी बहुत जरूरी है। इतने विचार, सूचनाएं, अफवाहें, अपने खुद के जीवन में हो रहे परिवर्तन, दुनिया में अचानक चीजों का घटना.. सब कुछ इतना जटिल है कि अपने दिमाग से लड़कर किसी एक चीज पर टिकना हमेशा मुश्किल रहा है। अब इतनी भूमिका मैंने क्यों बनाई? इसलिए कि बात को ठीक से समझा सकूं। ये फेसबुक है। कभी वक्त मिला लंबा लिखा, नहीं मिला एक लाइन में लिखकर बंद कर दिया। अब आपका तो तय है लेकिन आपको पढ़नेवाले का थोड़े ही कि वो कब आपका लिखा पढ़ेगा, किस मूड में पढ़ेगा, वनलाइनर का मर्म समझेगा या लंबा लिखा भी इग्नोर करेगा?? सबकी अपनी सुविधा और समझ है। हालांकि मैं कोई महत्वपूर्ण प्राणी नहीं हूं मगर यहां लिखता हूं तो सौ-पचास लोग तबज्जो दे देते हैं। आखिर इसी प्लेटफार्म पर सोलह साल से घर बसा रखा

है तो व्यवहार बन गया। ऐसे में मैंने देखा कि चार छह दिनों में मेरे लिखे से कई लोग तो सहजता बनाए रख सके मगर कुछ बिदक गए। जिनको बात जम नहीं रही थी हालांकि वो कम थे मगर फिर भी मेरा इरादा है कि आज दस पांच मिनट मिले हैं तो उनको संबोधित कर दूं। मैं उन्हें पूरे सम्मान के साथ बताना चाहता हूं कि युद्ध, हिंसा, अहिंसा, विनाश, सृजन, गांधी, बुद्ध, सिनेमा, नेहरू, भगत सिंह, किताब की संगत में अपने भी बीस साल से ज्यादा हो गए। इस पूरे प्रोसेस में एक धुरी से मैं खिंच खिंचाकर कुछ बीच में पहुंचा हूं। कल किधर जाऊंगा पता नहीं मगर सांप्रदायिक, जातिवादी, युद्धोन्मादी, क्षेत्रवादी, नफरती वगैरह तो बनना अब कठिन रहेगा। हां मेरे ही शब्दों की लापरवाही में किसी को कोई मौका मिल जाए बात अलग है। दुनिया है, जाने मेरी कब किस बात से आहत होकर हिसाब करने किस तरह पहुंच जाए।

तो बात ये है कि सेकेंड वर्ल्ड वॉर से उपजे दुख की सैकड़ों कहानियां मैंने भी यहां बांची हैं। आपस में लड़कर नष्ट हो चुकी सभ्यता के खंडहर से गांधी की धूल धूसरित तस्वीर उठा लाने की भविष्यवाणी भी मुझसे ही हुई है। हिंसा के दर्शन को अहिंसा के प्रयोगों से हरा लेने में मेरा विश्वास रहा है मगर एक सेकेंड!!! ये सब तो तब बचेगा ना जब हम रहेंगे??? ये गांधी का देश है पर गांधी के पट्टशिष्य और उत्तराधिकारी ने एक भारी भरकम सेना रखी। दो थोपे गए युद्ध लड़े। भाषा एटमिक सेंटर खोलने की इजाजत दी। उस व्यक्ति से बड़ा युद्धविरोधी कौन होगा जिसके लिए अहिंसा के पुजारी ने कहा कि ये मेरे बाद मेरी आवाज बनेगा??? मगर जब दुश्मन छाती पर चढ़ा वो लड़ा। उस हद तक लड़ा कि अपना देश, अपने लोगों को बचा सके।

अब किसी आम नागरिक से क्या अपेक्षा रखते हैं आप जो हिंसा का पक्षधर ना हो? वो अपने मुल्क के छब्बीस नागरिकों की लाश देखकर ये कह दे कि चलो जो हुआ सो हुआ?? बहावलपुर, मुरीदके, मुजफ्फराबाद के बारे में सरकार, सेना से लेकर देशी विदेशी खोजी जर्नलिस्ट तक बता चुके वहां क्या होता है। निशाना वहीं बना। उसके बाद पाकिस्तानी शैलिंग में मेरे दोस्त, परिचित, पार्टनर सब फंसे। ये सभी उन शहरों में थे जो पाकिस्तानी बदले का शिकार बने। जवाब में भारतीय सेना ने फिर से कार्यवाही की। इसमें उधर भी लोग मरे होंगे। कौन चाहता है खून बहे? सिविलियन छोड़िए सैनिक का भी क्यों बहे? वो भी किसी मां का बच्चा है, किसी बच्चे का बाप है मगर क्या आपको-मेरे केवल शुभेच्छाएं पोस्ट करते रहने से युद्ध रुक जाएगा? युद्ध रुकेगा जब उनको रोका जाए जिनका उद्देश्य ही आपको मारना है। सेना तक ने लिमिटेड रिसॉन्स की बात कही जो किसी जिम्मेदार देश की सेना से अपेक्षा है।

जुबानी तीर

“



निजी जीवन में नैतिक मूल्यों की अवहेलना करना हमारे सामाजिक न्याय के लिए सामूहिक संघर्ष को कमजोर करता है। ज्येष्ठ पुत्र की गतिविधि, लोक आचरण तथा गैर जिम्मेदाराना व्यवहार हमारे पारिवारिक मूल्यों और संस्कारों के अनुरूप नहीं है। अतएव उपरोक्त परिस्थितियों के चलते उसे पार्टी और परिवार से दूर करता हूं। अब से पार्टी और परिवार में उसकी किसी भी प्रकार की कोई भूमिका नहीं रहेगी। उसे पार्टी से 6 साल के लिए निष्कासित किया जाता है।

लालू यादव (आरजेडी सुप्रीमो)

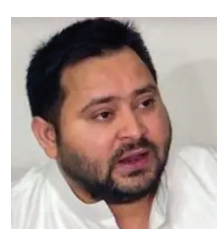
“



लालू यादव के लिए निश्चित पीड़ादायक रहा होगा। पारिवारिक मामले में राजनीति की जगह नहीं है। लालू यादव खुद बीमार हैं। उनके लिए यह दुखद और पीड़ादायक है। किसी भी पिता को अपने बेटे को परिवार से बाहर निकालना कितना दुखद होता है।

विजय सिन्हा (बिहार के डिप्टी सीएम)

“



अगर बात मेरे बड़े भाई की है तो राजनीतिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन अलग-अलग होते हैं। उन्हें अपने निजी फैसले लेने का पूरा हक है। वह स्वतंत्र हैं। हमारी पार्टी के अध्यक्ष ने इस बारे में अपनी भावना स्पष्ट कर दी है और जबसे उन्होंने ऐसा कहा है, वो उनकी व्यक्तिगत भावना है। हम लोगों ने इस तरह की बातों पर कोई सवाल नहीं उठाया।

तेजस्वी यादव (राजद नेता)

आंखों को दें आयुर्वेदिक संजीवनी

आधुनिक जीवनशैली में प्राचीन उपाय



@ डॉ. महिमा मक्कर

आंखें शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं, जिनसे हम दुनिया को देखते हैं। समय के साथ बढ़ती उम्र, गलत खानपान, तनाव, और अत्यधिक स्क्रीन टाइम के कारण आंखों की रोशनी में कमी आ सकती है। आयुर्वेद में आंखों की देखभाल के लिए कई प्राकृतिक और प्रभावी उपाय बताए गए हैं, जिन्हें अपनाकर हम अपनी आंखों की रोशनी को बढ़ा सकते हैं। आइए जानते हैं कुछ प्रमुख आयुर्वेदिक उपायों के बारे में—

त्रिफला चूर्ण का सेवन करें



त्रिफला चूर्ण, जो आंवला, बहेड़ा और हरितकी का मिश्रण है, आंखों के लिए अत्यंत लाभकारी है। यह आंखों की सफाई करता है और दृष्टि को सुधारता है। रातभर पानी में भिगोकर सुबह उस पानी से आंखों को धोने से धुंधलापन कम होता है और चश्मे का नंबर भी घट सकता है।

आंवला का सेवन

आंवला विटामिन C का बेहतरीन स्रोत है, जो आंखों की रेटिना की कोशिकाओं को स्वस्थ रखता है। आंवला



का जूस शहद के साथ मिलाकर पीने से आंखों की रोशनी में सुधार होता है। इसके नियमित सेवन से मोतियाबिंद और ग्लूकोमा जैसी बीमारियों से भी बचाव होता है।

शंखपुष्पी का उपयोग



शंखपुष्पी एक आयुर्वेदिक औषधि है जो आंखों की थकान और तनाव को कम करती है। यह ब्रेन फंक्शन और आंखों के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाती है। इसे जूस या पाउडर के रूप में सेवन किया जा सकता है।

अश्वगंधा का सेवन

अश्वगंधा में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं जो आंखों की नसों को सक्रिय करते हैं और थकान को दूर करते हैं।



इसे शहद के साथ मिलाकर या आंवला और मुलेठी के साथ सेवन करने से आंखों की रोशनी में सुधार होता है।

घी का नेत्र तर्पण

आयुर्वेद में घी का नेत्र तर्पण एक प्रभावी उपाय है। इसमें शुद्ध घी की कुछ बूंदों को आंखों में डालने से आंखों की लुब्रिकेशन बढ़ती है और सूखापन कम होता है। इसके अलावा, नाक में भी घी की कुछ बूंदें डालने से लाभ होता है।

आहार में सुधार है जरूरी

आंखों की रोशनी बढ़ाने के लिए आहार में सुधार करना आवश्यक है। विटामिन A, C, और E से भरपूर खाद्य पदार्थों का सेवन करें। पालक और गाजर का सेवन करें ये विटामिन A के अच्छे स्रोत हैं, जो आंखों की रोशनी को बढ़ाते हैं। बादाम और सूरजमुखी के बीज इनमें विटामिन E होता है, जो आंखों की सेहत के लिए फायदेमंद है। साथ ही शकरकंद और फलियां भी लेनी चाहिए। ये जिंक और बायोफ्लेवोनॉयड्स से भरपूर होते हैं, जो रेटिना की रक्षा करते हैं। आंखों की एक्सरसाइज भी बहुत जरूरी है। आंखों की एक्सरसाइज से आंखों की मांसपेशियों को

मजबूती मिलती है और ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है। आंखों को घड़ी की दिशा में और एंटी-क्लॉकवाइज घुमाना, पलकों को झपकाना, और आंखों को आराम देना कुछ सरल एक्सरसाइज हैं जो आंखों की सेहत के लिए लाभकारी हैं। गुलाब जल और आंवला की कलियों को डालकर रातभर रखें। सुबह इस मिश्रण से आंखों को धोने से आंखों की जलन और सूजन कम होती है और रोशनी में सुधार होता है।

पर्याप्त नींद लें और स्क्रीन टाइम को करें कम



आंखों की सेहत के लिए पर्याप्त नींद लेना आवश्यक है। साथ ही, स्क्रीन पर समय बिताने की आदत को नियंत्रित करें। 20-20-20 नियम अपनाएं: हर 20 मिनट में 20 सेकंड के लिए 20 फीट दूर किसी वस्तु को देखें। आंखों की रोशनी बढ़ाने के लिए आयुर्वेदिक उपाय न केवल प्रभावी हैं, बल्कि ये प्राकृतिक भी हैं। इन उपायों को नियमित रूप से अपनाकर हम अपनी आंखों की सेहत को बेहतर बना सकते हैं। हालांकि, किसी भी उपाय को अपनाने से पहले आयुर्वेदिक विशेषज्ञ से परामर्श लेना उचित है। अपनी आंखों की देखभाल करें और स्वस्थ दृष्टि का आनंद लें।

संत तिरुनिलकंठ नयनार: भक्ति का अमर प्रकाश

संत तिरुनिलकंठ नयनार, जिन्हें तिरु नीलकंठ या नीलकांतन भी कहा जाता है, शैव धर्म के 63 नयनार संतों में से एक हैं। उनकी कहानी कमजोरी को शक्ति में बदलने की अनुपम मिसाल है। चिदंबरम के एक साधारण कुम्हार से लेकर भगवान शिव के परम भक्त तक का उनका सफर, सनातन धर्म की गहरी शिक्षा देता है। यह लेख उनके जीवन, शिक्षाओं और सनातन धर्म में योगदान को भावपूर्ण, दार्शनिक और भक्ति से भरे शब्दों में बयान करता है। उनकी कहानी हमें सिखाती है कि सच्ची भक्ति और आत्म-संयम से हर कमी को शक्ति में बदला जा सकता है।

कमजोरी से शुरू हुआ पवित्र सफर

तिरुनिलकंठ नयनार का जन्म तमिलनाडु के चिदंबरम में हुआ, जहाँ भगवान शिव नटराज के रूप में विराजमान हैं। वे कुडियवर (कुम्हार) जाति से थे और मिट्टी के बर्तन बनाकर जीविका चलाते थे। उनकी पत्नी के साथ उनका जीवन सादा था, पर शिव भक्ति से भरा था। वे शिव भक्तों को मुफ्त में मिट्टी के कटोरे बाँटते थे, जो उनकी निःस्वार्थ सेवा का प्रतीक था।

लेकिन एक दिन, उनकी मानवीय कमजोरी ने उन्हें एक वेश्या के पास ले गया। यह पल उनके जीवन का सबसे काला क्षण था। जब वे घर लौटे, उनकी पत्नी को उनकी गलती का पता चला। दुखी होकर भी, उन्होंने अपनी पत्नी की जिम्मेदारी निभाई, पर पत्नी ने शारीरिक संबंध से इनकार कर दिया। एक दिन, गुस्से में पत्नी ने कहा, “क्या तुम हमें छोड़ोगे तिरुनिलकंठ?” यह शब्द या तो उनके नाम थे या भगवान शिव के। तिरुनिलकंठ ने इसे शिव की आज्ञा माना और प्रतिज्ञा की कि वे अब किसी भी स्त्री को, अपनी पत्नी सहित, कभी नहीं छुएंगे।

यह संकल्प उनकी कमजोरी को शक्ति में बदलने का प्रथम कदम था। सनातन धर्म में आत्म-संयम को योग का आधार माना जाता है। तिरुनिलकंठ ने अपनी गलती को स्वीकारा और उसे सुधारने का दृढ़ निश्चय किया। उनकी यह यात्रा हमें सिखाती है कि पश्चाताप और संकल्प से कोई भी कमी को पार किया जा सकता है।

शिव की परीक्षा: संयम का चमत्कार

तिरुनिलकंठ और उनकी पत्नी ने अपने वैवाहिक जीवन को भक्ति और संयम के साथ जीना शुरू किया। वे एक साथ रहते थे, पर शारीरिक संपर्क से दूर। यह संयम उनकी भक्ति की गहराई को दर्शाता था। भगवान शिव ने उनकी इस निष्ठा की परीक्षा लेने का निर्णय लिया।

शिव एक शैव योगी के रूप में उनके पास आए और एक “कीमती” मिट्टी का कटोरा उनकी देखभाल में सौंपा। कुछ समय बाद, जब योगी लौटे, कटोरा गायब था—यह शिव की लीला थी। तिरुनिलकंठ ने नया कटोरा देने की पेशकश की, पर योगी ने चोरी का आरोप लगाया। उन्होंने तिरुनिलकंठ को मंदिर के तालाब में अपनी पत्नी का हाथ पकड़कर सत्य की शपथ लेने को कहा।

तिरुनिलकंठ अपनी प्रतिज्ञा तोड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने और उनकी पत्नी ने एक बाँस की छड़ी के दोनों सिरों को पकड़ा और तालाब में डुबकी लगाई। जब योगी ने हाथ पकड़ने पर जोर दिया, तो तिरुनिलकंठ ने अपनी प्रतिज्ञा और उसकी वजह बताई। जैसे ही वे तालाब में डुबकी लगाकर बाहर आए, चमत्कार हुआ—वे दोनों युवा हो गए! आकाश में शिव और पार्वती प्रकट हुए, उन्हें आशीर्वाद दिया और कैलाश में स्थान दिया।



भक्ति और सेवा की अमर शिक्षाएँ

तिरुनिलकंठ नयनार की कहानी केवल एक संत की जीवनी नहीं, बल्कि सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों का जीवंत दस्तावेज है। उनकी शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं:

पश्चाताप का मार्ग: तिरुनिलकंठ ने अपनी गलती को स्वीकारा और उसे सुधारा। यह हमें सिखाता है कि सनातन धर्म में कोई भी पाप इतना बड़ा नहीं कि पश्चाताप से मुक्ति न मिले।

आत्म-संयम की शक्ति: उनकी ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा योग और तप का प्रतीक है। सनातन धर्म में इंद्रियों पर नियंत्रण को मोक्ष का द्वार माना जाता है।

निःस्वार्थ सेवा: शिव भक्तों को मुफ्त कटोरे बाँटना उनकी सेवा भावना को दर्शाता है। यह सिखाता है कि सच्ची भक्ति दूसरों के लिए जीने में है।

जाति से परे भक्ति: एक कुम्हार होते हुए भी, तिरुनिलकंठ की भक्ति ने उन्हें संत का दर्जा दिलाया। यह सनातन धर्म के उस सिद्धांत को मजबूत करता है कि भक्ति में कोई भेद नहीं।

विवाह की पवित्रता: तिरुनिलकंठ और उनकी पत्नी का रिश्ता दर्शाता है कि विवाह केवल शारीरिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक साझेदारी है।

उनकी ये शिक्षाएँ हमें सिखाती हैं कि जीवन का हर पहलू—चाहे वह गलती हो, संयम हो, या सेवा—ईश्वर की ओर ले जा सकता है।

यह चमत्कार सनातन धर्म की उस शिक्षा को रेखांकित करता है कि सच्ची भक्ति और संयम से मनुष्य ईश्वर की कृपा पा सकता है। तिरुनिलकंठ की कहानी हमें याद दिलाती है कि जीवन की हर परीक्षा में भगवान का हाथ होता है, जो हमें और मजबूत बनाता है।

सनातन धर्म में योगदान: एक शाश्वत प्रेरणा

तिरुनिलकंठ नयनार ने सनातन धर्म, विशेषकर शैव परंपरा, को समृद्ध किया। उनकी कहानी पेरिय पुराणम में संकलित है, जो 12वीं सदी में सेविकलार द्वारा लिखी गई। इस ग्रंथ ने उनकी भक्ति को अमर किया।

वे नीलकंठ शिव की पूजा को बढ़ावा देने वाले संत थे, जो विश्व के लिए विष पीने वाले शिव का रूप हैं। उनकी कहानी ने शैव भक्तों को प्रेरित किया कि भक्ति में कोई कमी अस्वीकार्य नहीं। 8वीं सदी के संत सुंदरार ने उन्हें “धन्य कुम्हार” कहा, जो जातिगत भेद को तोड़ने का प्रतीक था। संत पत्तिनाथार ने कहा कि वे तिरुनिलकंठ की आध्यात्मिक ऊँचाई तक कभी नहीं पहुँच सकते।

उनकी कहानी ने साहित्य और कला को भी प्रेरित किया। 19वीं सदी में गोपालकृष्ण भारती ने तिरुनिलकंठ नयनार चरित्रम नामक एक छोटा ओपेरा लिखा। तमिलनाडु के शिव मंदिरों में उनकी मूर्तियाँ भक्तों को उनकी विनम्रता और भक्ति की याद दिलाती हैं।

छत्तीसगढ़ में इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम में भगवद गीता

प्राचीन गणित और भारतीय संस्कृति की होगी पढ़ाई , 2025-26 सत्र से लागू होगा नया सिलेबस

@ आनंद मीणा

छत्तीसगढ़ की तकनीकी शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक बदलाव होने जा रहा है। 2025-26 के शैक्षणिक सत्र से राज्य के सभी इंजीनियरिंग कॉलेजों में श्रीमद्भगवद्गीता, प्राचीन भारतीय गणित, खगोल विज्ञान (एस्ट्रोनॉमी), ज्योतिष (एस्ट्रोलॉजी), भारतीय स्थापत्य कला और संविधान जैसे विषय पढ़ाए जाएंगे। यह कदम नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के तहत लिया गया है, जिसमें तकनीकी शिक्षा को संस्कृति और नैतिक मूल्यों से जोड़ने की दिशा में एक बड़ा प्रयास माना जा रहा है।

छात्रों को अब मशीनों और मैथमैटिक्स तक सीमित नहीं रखा जाएगा, बल्कि उन्हें इस देश के बौद्धिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक परंपरा से परिचित कराया जाएगा। यह नया सिलेबस राज्य के 28 इंजीनियरिंग कॉलेजों में चरणबद्ध रूप से लागू किया जाएगा।

पाठ्यक्रम में जोड़े गए हैं चार नए विषय

राज्य तकनीकी शिक्षा निदेशालय द्वारा तैयार नए सिलेबस में चार विशिष्ट विषय अनिवार्य रूप से पढ़ाए जाएंगे, जो प्रथम से लेकर चतुर्थ सेमेस्टर तक लागू होंगे:

Foundation Course on Ancient Indian Knowledge System-इसमें आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त जैसे गणितज्ञों और खगोलविदों के योगदान को पढ़ाया जाएगा। छात्र जानेंगे कि आधुनिक गणित और खगोल विज्ञान की नींव भारत में कब और कैसे रखी गई।

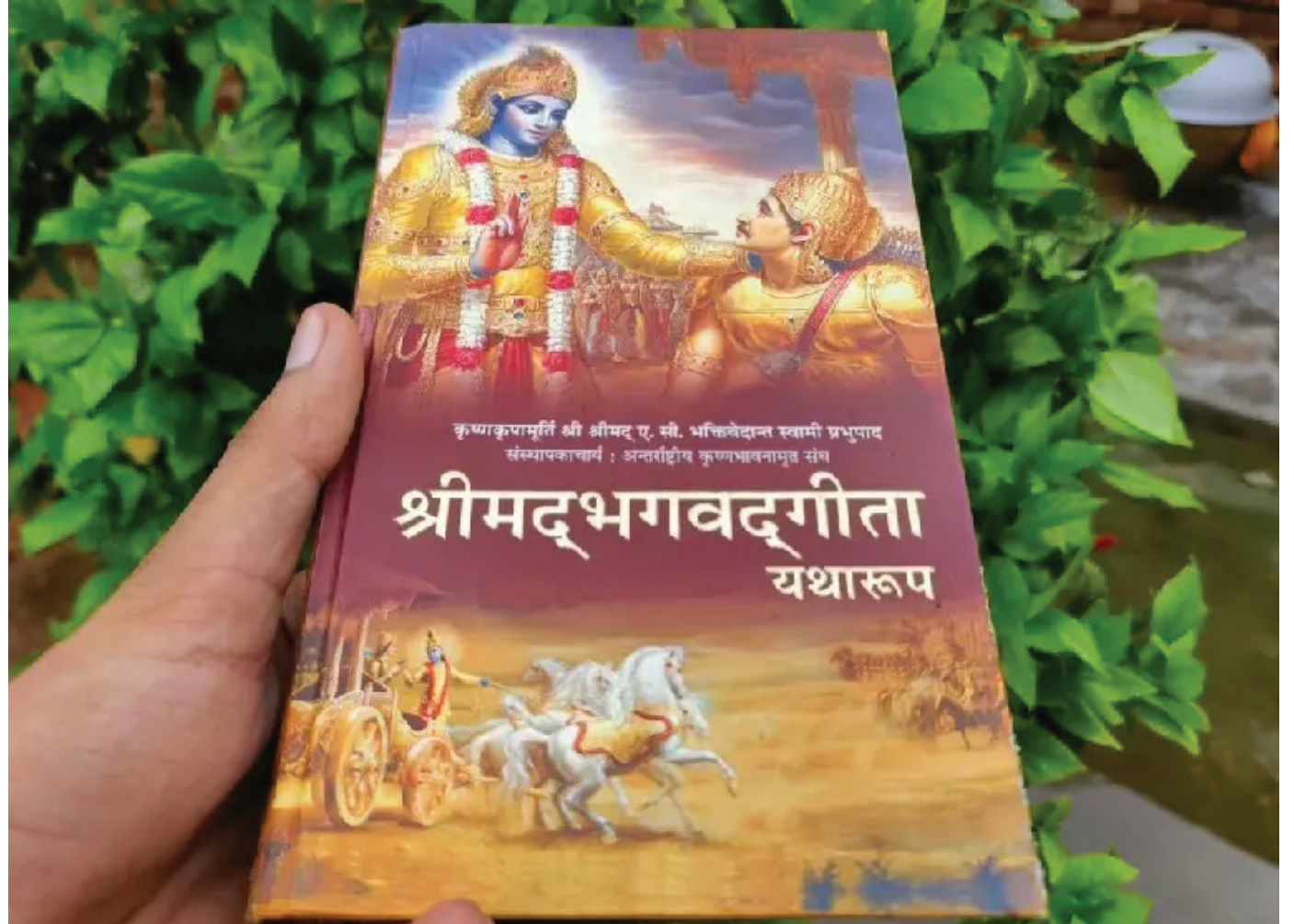
Srimad Bhagavad Gita: Manual of Life and Universe-दूसरे सेमेस्टर में गीता के श्लोकों और उनके जीवन दर्शन, कर्म सिद्धांत और नैतिक मूल्यों की व्याख्या की जाएगी। इसका उद्देश्य छात्रों को केवल पेशेवर नहीं, बल्कि संतुलित और जिम्मेदार नागरिक बनाना है।

Indian Traditional Knowledge: Science and Practices- यह विषय भारत के पारंपरिक वैज्ञानिक दृष्टिकोणों, जैसे वास्तु, पंचतत्व सिद्धांत, और स्वास्थ्य पर आधारित पद्धतियों को समर्पित होगा। खगोल और ज्योतिष को वैज्ञानिक पद्धति से समझाया जाएगा।

Indian Culture and Constitution of India-इस विषय में भारत की ऐतिहासिक सांस्कृतिक परंपराओं, स्थापत्य कला (द्रविड़, राजपूत, मराठा, कलिंग शैली), और संविधान के मूलभूत सिद्धांतों को पढ़ाया जाएगा।

हर ब्रांच के लिए होगा अलग फिजिक्स, और रिकल बेस्ड सब्जेक्ट

अब तक इंजीनियरिंग के पहले वर्ष में सभी छात्र एक जैसा फिजिक्स पढ़ते थे। मगर अब फिजिक्स भी ब्रांच-विशिष्ट होगी। यानी मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, सिविल या कंप्यूटर साइंस के छात्रों के लिए फिजिक्स का कंटेंट अलग-अलग होगा, ताकि उनके क्षेत्र से जुड़े विषयों की गहराई को और बेहतर समझा जा सके। साथ ही, पहले और दूसरे वर्ष में छात्रों को एक-एक रिकल बेस्ड सब्जेक्ट पढ़ाया जाएगा। उदाहरण के लिए, मैकेनिकल इंजीनियरिंग में



स्मार्ट मैनुफैक्चरिंग पर आधारित विषय कोर्स में जोड़ा जाएगा। इससे छात्रों को इंडस्ट्री में उपयोगी आधुनिक तकनीकों की जानकारी मिलेगी।

अब डिग्री बीच में छोड़ने पर भी नुकसान नहीं

नए सिलेबस में मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एग्जिट सिस्टम भी लागू किया जा रहा है। यानी यदि कोई छात्र बीटेक की पढ़ाई बीच में किसी कारणवश छोड़ देता है, तो उसका साल बर्बाद नहीं जाएगा। अब 1 साल पूरा करने पर मिलेगा सर्टिफिकेट साथ में 2 साल पर मिलेगा डिप्लोमा और 4 साल पर मिलेगी बीटेक की डिग्री। बाद

में छात्र चाहें तो अपनी पढ़ाई वहीं से दोबारा शुरू भी कर सकते हैं। यह प्रावधान छात्रों की शैक्षणिक यात्रा को लचीला और व्यावहारिक बनाता है।

छात्र और शिक्षकों में बढ़ा उत्साह

छात्रों का कहना है कि इस बदलाव से उन्हें न केवल टेक्निकल स्किल्स मिलेंगी, बल्कि वे भारत की संस्कृति, इतिहास और दर्शन को भी समझ पाएंगे। राज्य इंजीनियरिंग कॉलेज रायपुर के बीटेक छात्र अर्पण मिश्रा कहते हैं, “गीता को हम अक्सर एक धार्मिक ग्रंथ समझते हैं, लेकिन जब उसके श्लोकों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पढ़ाया जाएगा,

तो यह हमारे सोचने के तरीके को बदल देगा। लोगों का कहना है कि शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। इस बदलाव से छात्रों में संवेदनशीलता, सोचने की स्वतंत्रता और सामाजिक जिम्मेदारी बढ़ेगी।

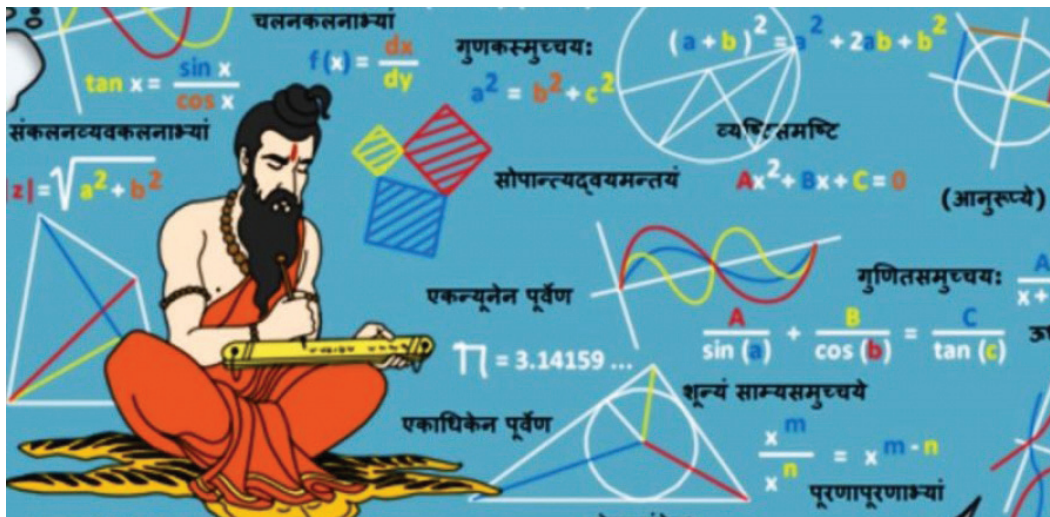
शिक्षाविदों ने बताया ऐतिहासिक निर्णय

देशभर के शिक्षा विशेषज्ञों ने छत्तीसगढ़ सरकार की इस पहल की सराहना की है। नई शिक्षा नीति के प्रावधानों को गंभीरता से लागू करना अन्य राज्यों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। शिक्षा विश्लेषक प्रो. ए.के. मिश्रा कहते हैं, “तकनीकी शिक्षा को संस्कृति और परंपरा से जोड़ने का काम अभी तक भारत में गंभीरता से नहीं हुआ। यह एक नए युग की शुरुआत है, जहां इंजीनियरिंग ग्रैजुएट न केवल स्मार्ट मशीनों का निर्माण करेंगे, बल्कि समाज के मूल्यों को भी मजबूती देंगे।

भविष्य के इंजीनियर अब होंगे

सांस्कृतिक रूप से सजग नागरिक

छत्तीसगढ़ सरकार का यह निर्णय तकनीकी शिक्षा को सांस्कृतिक चेतना और मूल्यों के साथ जोड़ने की ऐतिहासिक पहल है। श्रीमद्भगवद्गीता, भारतीय गणित, ज्योतिष और संविधान जैसे विषयों को इंजीनियरिंग सिलेबस में जोड़ना, न केवल छात्रों की बौद्धिक गहराई को बढ़ाएगा, बल्कि उन्हें एक पूर्ण और जागरूक नागरिक बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।



कल्पतरु: ब्रह्मा, विष्णु, महेश का निवास और मोक्ष का माध्यम

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी का दिव्य सन्देश

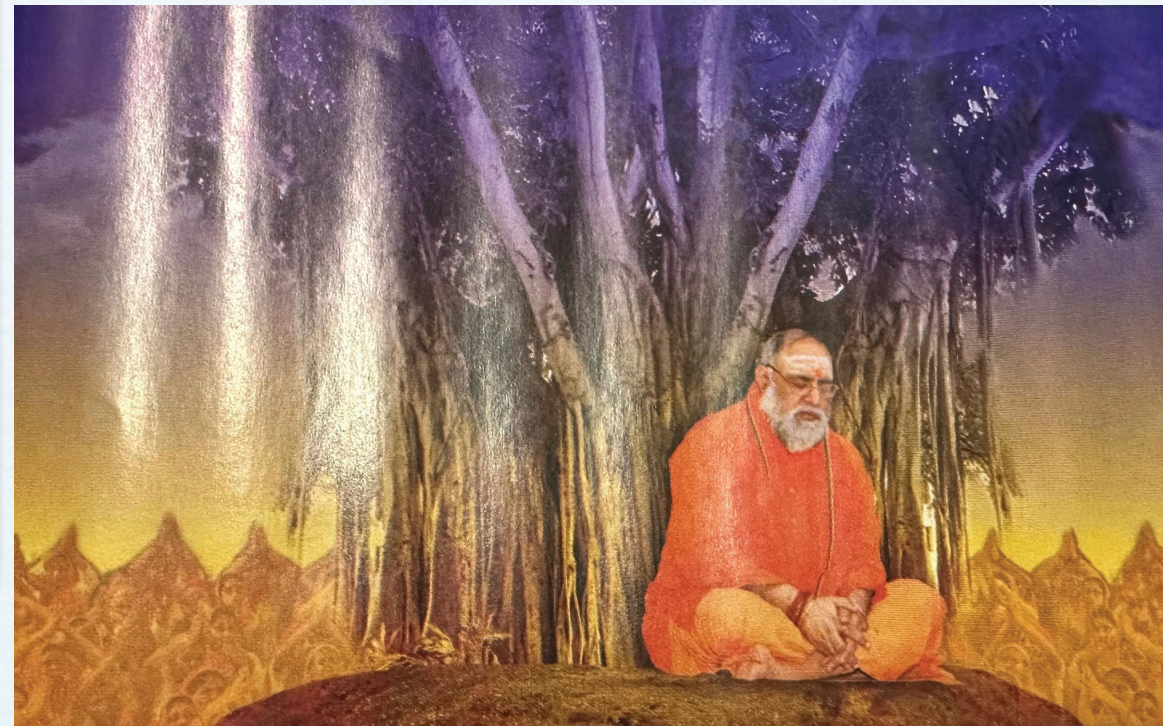


दिल्ली स्थित यह सिद्ध वटवृक्ष, जिसे पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कल्पतरु की संज्ञा दी है, केवल एक वृक्ष नहीं, बल्कि परमात्मा का प्रत्यक्ष स्वरूप है। यह वटवृक्ष ब्रह्मा, विष्णु और महेश — त्रिदेवों का निवास स्थान है। इसकी जड़ों में ब्रह्मा, तने में भगवान विष्णु और शाखाओं-पत्तों में महादेव शिव का वास बताया गया है।

पूज्य सद्गुरुदेव जी ने इस कल्पतरु के विषय में कहते हुए भावविभोर होकर कहा, “हम शरीर को काट सकते हैं, आत्मा को नहीं। आत्मा, परमात्मा का अंश है, जिसे कोई अस्त्र-शस्त्र काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, वायु सुखा नहीं सकती। जैसे आत्मा अजर, अमर और अक्षय है, ठीक उसी प्रकार यह वटवृक्ष भी अमर है।” यह कल्पतरु सृष्टि की आदि से है और सृष्टि के अंत तक रहेगा। प्रलय के बाद भी यह बीज रूप में अस्तित्व में रहेगा, जैसे आत्माएं अपने मूल में बनी रहती हैं। सद्गुरुदेव जी का यह भी विश्वास है कि अगर संपूर्ण निरंकारी कॉलोनी समाप्त भी हो जाए, तब भी यह वृक्ष अपने स्थान पर अडिग खड़ा रहेगा, क्योंकि यह साधारण वृक्ष नहीं, धर्म, साधना और तप का जीवंत केंद्र है।

श्रद्धा और अश्रद्धा का फल निश्चित

सद्गुरुदेव जी ने चेतावनी भी दी “जो इस कल्पतरु को काटने का दुस्साहस करेगा, उसका वंश नष्ट हो जाएगा। और जो इसे रोपेगा या इसका संरक्षण करेगा, उसका वंश तब तक सुरक्षित रहेगा जब तक पृथ्वी का अस्तित्व है।” इसी भाव से उन्होंने बताया कि जो लोग इसके नीचे अपवित्र कार्य करते हैं, जैसे मूत्र त्याग, वे मूत्र रोगों से ग्रसित हो जाते हैं। हाँ, यदि कोई बालक अनजाने में ऐसा कर दे, तो उस पर दोष नहीं लगता, परंतु जानबूझकर किया गया अनादर पाप के समान है।



विज्ञान से परे है इसकी शक्ति

यह कल्पतरु केवल आध्यात्मिक शक्ति से संपन्न नहीं, औषधीय गुणों से भी परिपूर्ण है। सद्गुरुदेव जी कहते हैं कि आयुर्वेद में इसका विस्तृत वर्णन है। भगवान धन्वंतरि और महर्षि चरक जैसे आयुर्वेदाचार्यों ने इसके पत्तों, छाल, फल और जड़ों से निर्मित औषधियों की महिमा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इसके माध्यम से श्वास, पाचन, त्वचा, कान-नाक, रक्त, स्त्री एवं पुरुषों के गुप्त रोगों तक का उपचार सहज संभव है। यदि औषधि मंत्रोच्चारण सहित दी जाए तो तत्कालिक लाभ होता है। यह वृक्ष वैज्ञानिकों को भी चकित कर देने में सक्षम है। वनस्पति विज्ञान के अनुसार यह एक अद्वितीय प्रजाति है, किंतु जो बात विज्ञान से भी परे है वह यह कि इसमें साधना और मंत्रों की ऊर्जा को आत्मसात कर उसे पुनः वितरित करने की शक्ति है। जब कोई साधक इसके नीचे साधना करता है, तो यह वृक्ष उन उर्जाओं को अपने भीतर संचित कर लेता है और उपयुक्त समय पर प्रार्थना करने वाले को प्रदान कर देता है।

यह वृक्ष है एक जीवंत गुरुकृपा

सद्गुरुदेव जी ने कहा, “यह वृक्ष केवल वृक्ष नहीं, यह साक्षात् नारायण है। इसने मेरी प्रार्थनाओं को सुना है, मेरे साथ वार्तालाप किया है।” सत्ताइस वर्षों तक पूज्य सद्गुरुदेव जी ने इसके नीचे बैठकर सिद्ध मंत्रों का जाप किया है, जिससे यह वृक्ष जागृत हो गया है। जागृत अर्थात् यह अब केवल प्रकृति का हिस्सा नहीं, चेतन सत्ता का वह माध्यम है जो भक्त की मनोकामनाओं को पूर्ण कर सकता है।

उन्होंने आगे कहा, “मैं इस वृक्ष की गारंटी देता हूँ। यदि आप श्रद्धा से इसके नीचे बैठकर गुरु मंत्र का जप करें, सच्चे हृदय से पूजा करें, तो यह आपके जीवन से सभी दुखों को दूर करेगा। लेकिन शर्त यह है कि जो अनुभव आपको प्राप्त हों, उन्हें किसी से साझा न करें — क्योंकि सिद्ध साधनाओं की शक्ति गोपनीयता में रहती है।”

कल्पतरु का महत्व ग्रंथों और इतिहास में भी

इस वटवृक्ष की तुलना उस दिव्य वटवृक्ष से की जाती है जिसके नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यही वह वंश परंपरा है जिसमें महर्षि दुर्वासा जैसे तपस्वियों ने तप किया, और यह स्थान एक जीवंत तीर्थ बन गया। इस कल्पतरु की 40 दिनों तक पूजा और नियमित जल अर्पण से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। यह वृक्ष न केवल पर्यावरण को शुद्ध करता है, बल्कि मन और आत्मा को भी।

सिद्ध और साधारण में फर्क, सद्गुरु जी ने एक सुंदर उदाहरण देते हुए बताया कि, “बाजार से खरीदी हुई बूंदी और मंदिर से प्राप्त प्रसाद की बूंदी में जितना अंतर होता है, उतना ही अंतर साधारण वृक्ष और इस सिद्ध कल्पतरु में है। जिस प्रकार गुरुद्वारे से प्राप्त हलवा ‘कड़ाह प्रसाद’ बन जाता है, उसी प्रकार यह वृक्ष भी प्रसाद स्वरूप है, साधना का प्रतीक है, गुरु की कृपा का केंद्र है।”

श्रद्धा से सिद्धि संभव है

यह कल्पतरु केवल वनों का हिस्सा नहीं, संपूर्ण निरंकारी कॉलोनी का आध्यात्मिक आधार है। जो इसकी पूजा करेगा, उसे आरोग्यता, आयु, संतान, समृद्धि, और अंततः आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होगी। यह साधारण वृक्ष नहीं, गुरु की कृपा से जागृत एक जीवंत शक्ति है। परम पूज्य सद्गुरुदेव जी की वाणी में विश्वास करें और श्रद्धा से वटवृक्ष की सेवा करें। यह कल्पतरु आपकी हर बाधा को हर लेगा, बस शर्त यह है कि मन से, मौन से और मोह से मुक्त होकर इसके समीप जाएं।



एक जवान की अमर कहानी लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी

उत्तर सिक्किम की बर्फीली वादियों में, जहाँ हवा इतनी ठंडी है कि साँसें जम जाएँ, एक 23 साल का नौजवान अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी जंग लड़ रहा था। वो जंग थी अपने साथी को बचाने की। लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी, सिक्किम स्काउट्स रेजिमेंट का एक नया सितारा, जिसने 22 मई 2025 को अपनी जान की बाजी लगाकर दिखा दिया कि सच्चा सैनिक वही है जो अपने भाई के लिए सब कुछ कुर्बान कर दे। ये कहानी है शशांक की—एक छोटे से शहर अयोध्या के लाल की, जिसने अपने छोटे से करियर में वो कर दिखाया जो बड़े-बड़े सपने देखते हैं। उनकी ये कहानी सिर्फ एक हादसे की नहीं, बल्कि हिम्मत, प्यार और देशभक्ति की एक मिसाल है।

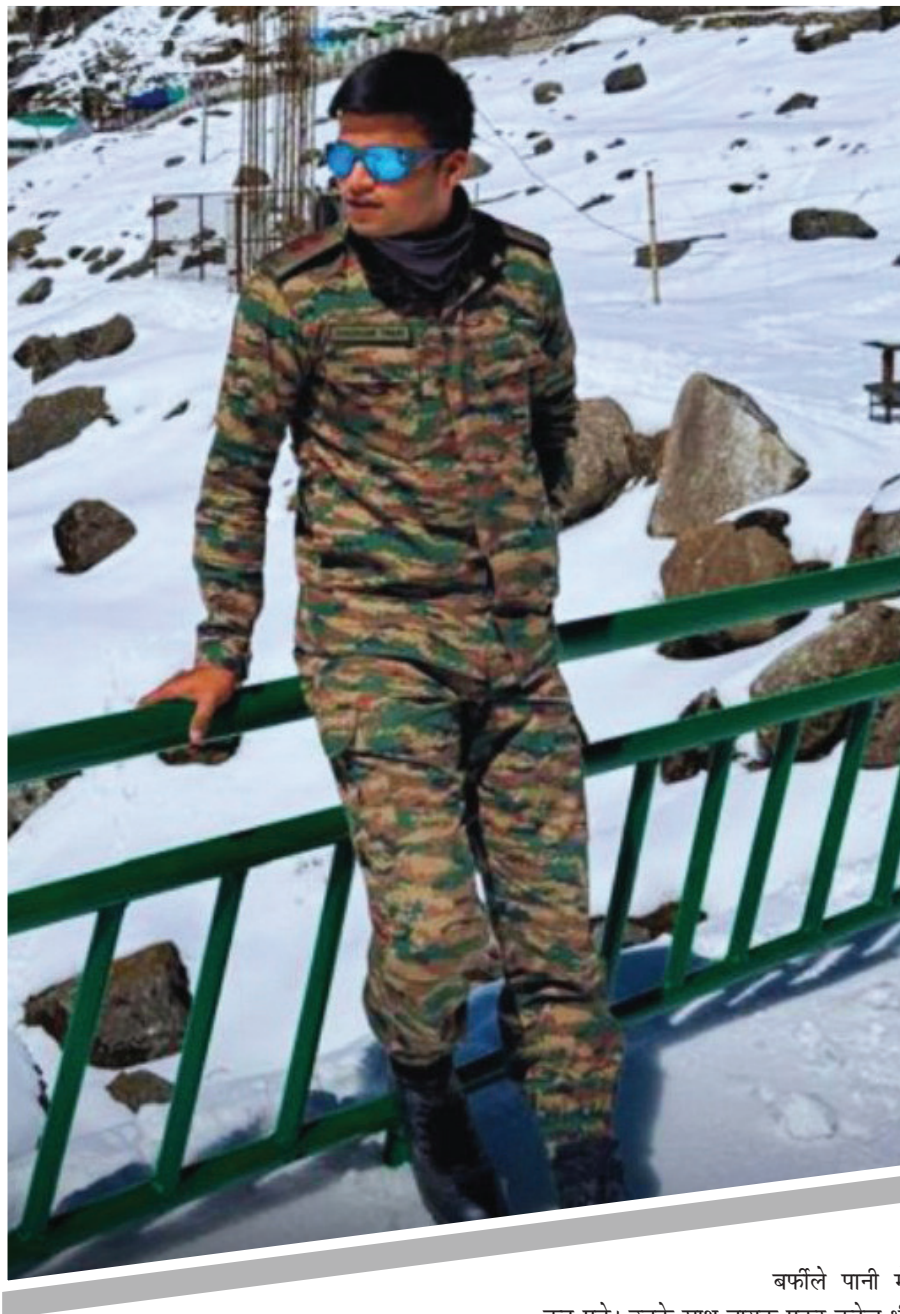
अयोध्या का शेर: शशांक का बचपन और सपने

शशांक तिवारी का जन्म अयोध्या में हुआ, उस शहर में जो राम की नगरी के नाम से जाना जाता है। अयोध्या सिर्फ एक जगह नहीं, ये एक फीलिंग है—जहाँ हर गली में इतिहास और संस्कृति की खुशबू बसी है। शशांक के परिवार में देशभक्ति का जज्बा खून में था। उनके पिता और दादाजी की कहानियाँ, जो देश के लिए कुछ कर गुजरने की थीं, शशांक के दिल में बचपन से ही घर कर गईं। स्कूल में वो एवरेज स्टूडेंट नहीं थे। उनकी मेहनत और डिसिप्लिन ने उन्हें नेशनल डिफेंस एकेडमी (NDA) के एंट्रेंस एग्जाम में ऑल इंडिया रैंक 463 दिलाई। ये कोई छोटी बात नहीं थी। सेंचुरियन डिफेंस एकेडमी के उनके टीचर्स उन्हें “अयोध्या का शेर” कहते थे—एक ऐसा लड़का जो चुपके से मेहनत करता था, लेकिन जब बात लीडरशिप की आती थी, तो सबसे आगे खड़ा रहता था।

शशांक का सपना था इंडियन आर्मी में ऑफिसर बनना। 14 दिसंबर 2024 को, जब वो सिक्किम स्काउट्स रेजिमेंट में लेफ्टिनेंट बने, तो उनके घर में खुशी की लहर दौड़ गई। माँ ने मिठाई बाँटी, पिता ने गर्व से सीना चौड़ा किया। लेकिन शशांक को पता था कि असली टेस्ट अभी बाकी है। सिक्किम की ऊँची-ऊँची पहाड़ियों में, जहाँ ऑक्सीजन कम और खतरे ज्यादा हैं, उनकी जिंदगी का सबसे बड़ा इम्तिहान इंतजार कर रहा था। जिंदगी कितनी अजीब है—जो लड़का राम की नगरी में पला, वो सिक्किम की बर्फ में अमर हो गया। क्या ये सिर्फ इत्तेफाक है, या फिर नियति का कोई गहरा खेल?

बर्फीला तूफान: वो दिन जब शशांक अमर हुए

22 मई 2025 का दिन। सिक्किम की ठंडी वादियाँ, जहाँ हर कदम पर खतरा मंडराता है। शशांक अपनी यूनिट के साथ एक रूट ओपनिंग पेट्रोल पर थे। उनका मिशन था एक टैक्टिकल ऑपरेटिंग बेस तक रास्ता बनाना।



पहाड़ों में ये काम आसान नहीं। वहाँ एक गलत कदम जिंदगी और मौत का फर्क बन सकता है। उनकी टीम में था अग्निवीर स्टीफन सुब्बा, एक जवान जिसके साथ शशांक का भाई जैसा रिश्ता था। रास्ते में एक लकड़ी का पुल आया, जो एक तेज बहती नदी के ऊपर था। नदी का पानी इतना ठंडा था कि हड्डियाँ जम जाएँ। अचानक, स्टीफन का पैर फिसला, और वो नदी में जा गिरे।

शशांक ने एक सेकंड भी नहीं सोचा। वो सीधे उस

कूद पड़े। उनके साथ नायक पुकुर कटेल भी कूदे। दोनों ने मिलकर स्टीफन को बाहर निकाला, लेकिन इस कोशिश में शशांक खुद बह गए। आधे घंटे बाद, 800 मीटर दूर उनका शरीर मिला। वो चले गए थे, लेकिन स्टीफन को जिंदगी दे गए। ये सिर्फ एक हादसा नहीं था—ये था एक सैनिक का अपने भाई के लिए किया गया बलिदान। इंडियन आर्मी के लेफ्टिनेंट जनरल आर.सी. तिवारी ने कहा, “शशांक ने वो किया जो हमारी सेना का दिल है—अपने साथी के लिए जान दे देना।” क्या है ये जोश? क्या है ये जुनून? शायद यही वो आग है जो एक

सैनिक को साधारण इंसान से अलग करती है।

कुर्बानी का मोल: शशांक की विरासत

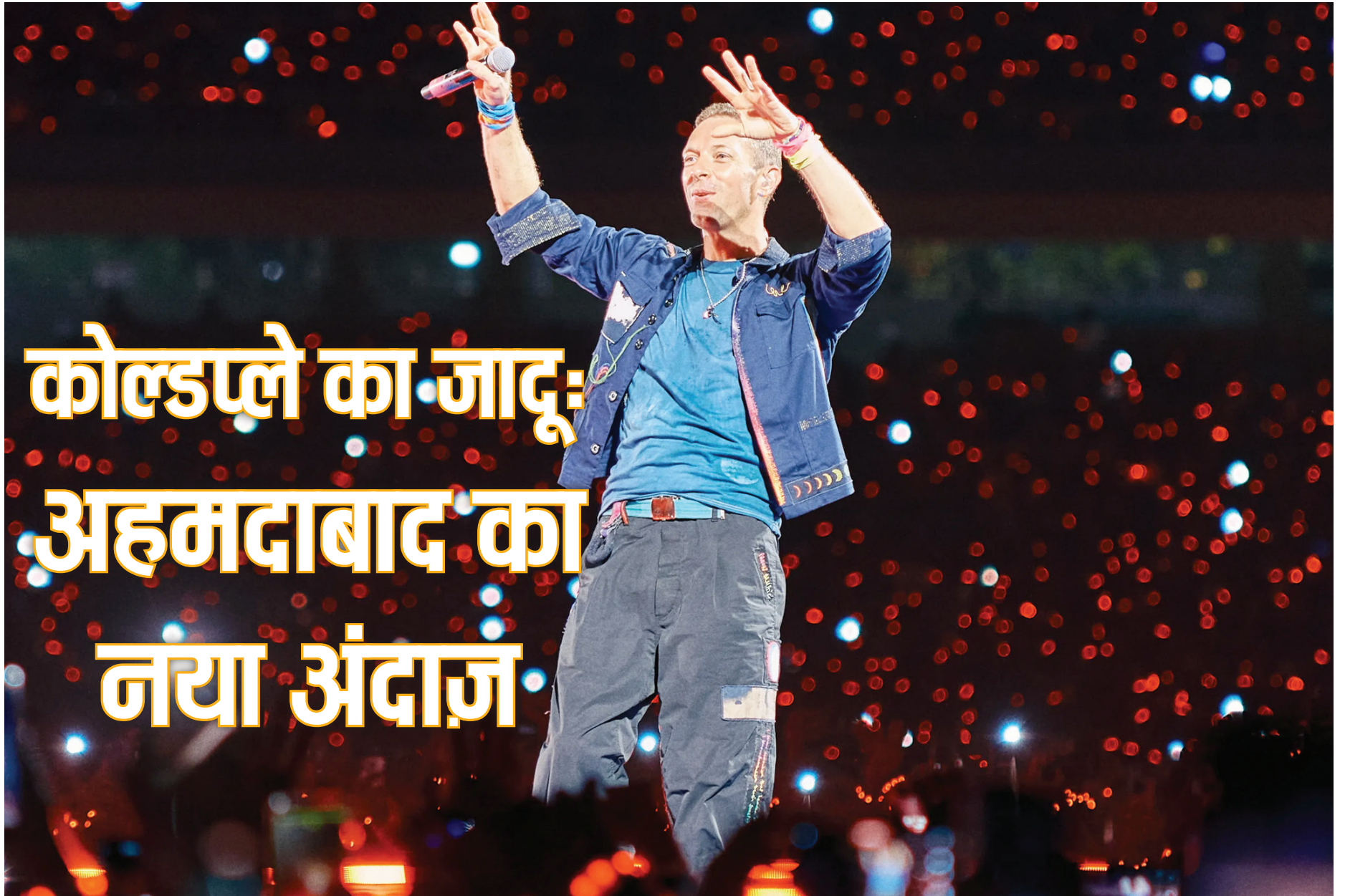
शशांक की शहादत की खबर जैसे ही फैली, पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई। सिक्किम के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। उनके नाम को दिल्ली के नेशनल वॉर मेमोरियल में लिखा गया। अयोध्या में लोग चाहते हैं कि उनके नाम पर कोई सड़क या स्कूल हो, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ उनके बलिदान को याद रखें। लेकिन शशांक की कहानी सिर्फ एक मेमोरियल या सड़क के नाम तक सीमित नहीं है। ये कहानी है उस फीलिंग की, जो हर हिंदुस्तानी के दिल में जागती है जब वो अपने सैनिकों की बात सुनता है।

उनकी शहादत हमें एक सवाल पूछती है—हम अपनी जिंदगी में कितना रिस्क लेते हैं दूसरों के लिए? शशांक ने सिर्फ 23 साल की उम्र में, अपने छह महीने के करियर में, वो कर दिखाया जो हम में से ज्यादातर सिर्फ सपनों में सोचते हैं। सिक्किम की उन ऊँची चोटियों में, जहाँ साँस लेना भी मुश्किल है, शशांक ने साबित किया कि सच्ची देशभक्ति चिल्लाने में नहीं, बल्कि चुपके से की गई कुर्बानी में है। लेकिन एक सवाल मन में उठता है—क्या उस लकड़ी के पुल को और सुरक्षित नहीं किया जा सकता था? क्या ऐसी ट्रेजेडी को रोका जा सकता था? ये सवाल हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि हमारे सैनिकों की हिफाजत के लिए और क्या किया जा सकता है।

अमरता का रास्ता: एक प्रेरणा

शशांक तिवारी की कहानी हमें याद दिलाती है कि जिंदगी का मतलब सिर्फ जीना नहीं, बल्कि कुछ ऐसा करना है जो दूसरों को जिंदगी दे जाए। उनकी कुर्बानी हमें सिखाती है कि सच्चा सैनिक वही है जो अपने भाई के लिए अपनी जान दे दे। अयोध्या से सिक्किम तक, शशांक का सफर छोटा था, लेकिन उसका असर बहुत बड़ा है। वो आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी कहानी हर उस नौजवान के दिल में जिंदा रहेगी जो NDA का सपना देखता है, जो देश के लिए कुछ करना चाहता है।

फिलॉसफी कहती है कि इंसान तभी अमर होता है जब उसकी कहानी दूसरों को प्रेरित करती है। शशांक की कहानी ऐसी ही है। वो हमें सिखाते हैं कि जिंदगी की कीमत उसकी लंबाई में नहीं, उसके मकसद में है। तो आइए, हम सब एक पल रुकें। अपने सैनिकों को याद करें। उनके परिवारों के लिए कुछ करें। शायद एक छोटा सा कदम—किसी सैनिक के बच्चे की पढ़ाई में मदद, या बस उनकी कहानियाँ शेयर करना—शशांक जैसे नायकों को अमर रख सकता है।



कोल्डप्ले का जादू: अहमदाबाद का नया अंदाज़

25 और 26 जनवरी 2025 को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में कोल्डप्ले के “म्यूजिक ऑफ द स्प्रिंग्स” कॉन्सर्ट ने इतिहास रच दिया। 1.3 लाख लोग, चमकती LED रिस्टबैंड्स, और “येलो” की धुन ने रात को रंगीन कर दिया। लेकिन ये सिर्फ एक कॉन्सर्ट नहीं था—ये था अहमदाबाद का दुनिया को नया परिचय। 700 करोड़ रुपये की आर्थिक उछाल, 15,000 नौकरियाँ, और शहर का बदला हुआ रुतबा। क्या एक बैंड सचमुच इतना बदलाव ला सकता है? या ये बस एक रात का जादू था? आइए, इस कहानी में डूबते हैं, जहाँ संगीत, अर्थव्यवस्था, और सपने एक साथ नाचते हैं।

700 करोड़ का सुर: अर्थव्यवस्था की नई धुन

कोल्डप्ले के कॉन्सर्ट ने अहमदाबाद की अर्थव्यवस्था में 700 करोड़ रुपये का तूफान ला दिया। इसमें से 250 करोड़ का सीधा फायदा और 72 करोड़ का GST। होटल्स, रेस्तराँ, ट्रांसपोर्ट, और दुकानें—सबने इस मौके को भुनाया। होटल्स की कीमतें 3-6 गुना बढ़ गईं, कुछ रातें 90,000 रुपये तक पहुँचीं। अहमदाबाद मेट्रो ने रिकॉर्ड तोड़ा, और 980 फ्लाइट्स ने तीन दिन में 1.38 लाख यात्रियों को ढोया। 15,000 टेम्परेरी जॉब्स बनीं, जिनमें 9,000 अहमदाबाद के लोग थे—पुलिस, वॉलंटियर्स, और स्टाफ।

लेकिन ये नंबर सिर्फ पैसे की बात नहीं करते। एक चायवाला, जिसकी दुकान स्टेडियम के पास थी, ने बताया, “पहली बार मेरी कमाई दिन में 10,000 रुपये

हुई। ऐसा लगा जैसे दीवाली और ईद एक साथ आ गए।” फिर भी, गुजरात कांग्रेस के मनोज दोशी का सवाल गहरा है: “700 करोड़ का शोर अच्छा है, लेकिन बेरोजगारी और स्कूलों का क्या?” सचमुच, ये पैसा कितनों तक पहुँचा? हाई-एंड होटल्स और फ्लाइट्स का फायदा अमीरों को ज्यादा हुआ। क्या ये उछाल आम आदमी की जेब तक पहुँची? या ये बस एक रात का सपना था, जो सुबह गायब हो गया? संगीत ने अर्थव्यवस्था को नचाया, लेकिन क्या ये नाच लंबा चलेगा?

ड्राई स्टेट, फुल वाइब

अहमदाबाद में शराब बैन है। ऑर्गनाइजर्स को डर था कि ये “ड्राई स्टेट” कॉन्सर्ट का मजा किरकिरा कर देगा। लेकिन कोल्डप्ले और बुकमायशो ने इसे चैलेंज की तरह लिया। मुंबई से स्पेशल ट्रेनें चलीं, मेट्रो रात तक खुली रही, और स्टेडियम के गेट्स को स्मूथ बनाया गया। रेलवे मिनिस्टर के साथ मिलकर ट्रांसपोर्ट का जुगाड़ किया गया, क्योंकि उसी वक्त महाकुंभ भी चल रहा था।

ये सिर्फ लॉजिस्टिक्स की जीत नहीं थी। ये दिखाता है कि गुजरात का अनुशासन और इंफ्रास्ट्रक्चर दुनिया को ललकार सकता है। गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन और जय शाह की मेहनत ने स्टेडियम को एक ग्लोबल स्टेज बना दिया। हरक शंघवी, गुजरात के गृह राज्यमंत्री, ने कहा, “ये कॉन्सर्ट एक SOP बन सकता है—दूसरे शहर सीखें।” लेकिन सवाल ये है: क्या अहमदाबाद हर बार इतना तैयार रहेगा? ट्रेनें और मेट्रो

तो बढ़िया थीं, लेकिन रोजमर्रा की भीड़ के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार है? और VIP ट्रीटमेंट की आलोचना? क्या ये इवेंट सिर्फ बड़े लोगों के लिए था? संगीत ने सबको जोड़ा, लेकिन शहर को एकजुट करने का काम अभी बाकी है।

अहमदाबाद का ग्लोबल डेब्यू

2.22 लाख लोग, 500 से ज्यादा शहर, 28 स्टेट्स, और 5 यूनिनयन टेरिटरीज—कोल्डप्ले ने अहमदाबाद को इंडिया का नक्शा बना दिया। 86% लोग बाहर से आए। 36% ने शहर के टूरिस्ट स्पॉट्स घूमे, 38% ने शॉपिंग की (औसतन 2,253 रुपये खर्च किए)। 78% लोगों ने कहा कि अब अहमदाबाद कॉन्सर्ट के लिए परफेक्ट है। एक दिल्ली की लड़की, नेहा, ने बताया, “मैंने पहली बार साबरमती आश्रम देखा। कोल्डप्ले ने मुझे अहमदाबाद से प्यार करवाया।”

लेकिन एक सवाल खटकता है: कोल्डप्ले को इतना पुरा, पर गुजरात का दायरो कहां? लोकल आर्टिस्ट्स को वैसा स्टेज क्यों नहीं? “वोकल फॉर लोकल” का नारा तो है, लेकिन क्या हम अपनी संस्कृति को भूल रहे हैं? ये कॉन्सर्ट 2036 ओलंपिक्स के लिए अहमदाबाद की दावेदारी को मजबूत करता है। पीएम मोदी ने इसे “कॉन्सर्ट इकॉनमी” का हिस्सा बताया, जो 2024 में 12,000 करोड़ की थी और 19% की रफ्तार से बढ़ रही है। फिर भी, क्या हम ग्लोबल स्टार्स के पीछे अपनी जड़ों को छोड़ रहे हैं? संगीत जोड़ता है, लेकिन हमें ये चुनना है कि कौन सा सुर हमारी आत्मा को छूता है।

हरा सपना, सुनहरा भविष्य: सस्टेनेबिलिटी और विरासत

कोल्डप्ले ने सिर्फ संगीत नहीं, सस्टेनेबिलिटी का मैसेज भी लाया। 34,000+ किलो कचरे का 95% लैंडफिल से बचाया गया। सिंगल-यूज प्लास्टिक बैन किया गया, साइकिलिंग स्टेशन्स और सोलर पैनल्स यूज हुए। 70% LED रिस्टबैंड्स वापस आए, जो रियूज होंगे। लेकिन 980 फ्लाइट्स और लाखों की भीड़ का कार्बन फुटप्रिंट? वो सवाल अभी अनसुलझा है।

ये कॉन्सर्ट एक शुरुआत है। अहमदाबाद ने दिखाया कि वो ग्लोबल इवेंट्स हैंडल कर सकता है। लेकिन क्या ये एक बार का जादू था? या शहर अब हर साल ऐसा कुछ करेगा? सस्टेनेबिलिटी, इंकलूसिविटी, और लोकल कल्चर को बैलेंस करना होगा। एक लोकल आर्टिस्ट ने कहा, “कोल्डप्ले तो ठीक है, लेकिन हमारा दायरो भी दुनिया को दिखाना चाहिए।” ये कॉन्सर्ट एक दर्पण है—हमें दिखाता है कि हम क्या हैं, और क्या बन सकते हैं।

एक नई धुन की शुरुआत

कोल्डप्ले का कॉन्सर्ट अहमदाबाद के लिए एक टर्निंग पॉइंट था। इसने शहर को दुनिया के नक्शे पर ला दिया, अर्थव्यवस्था को हिलाया, और सपनों को उड़ान दी। लेकिन सवाल बाकी हैं: क्या ये चमक सबके लिए थी? क्या हम ग्लोबल के साथ लोकल को जोड़ पाएंगे? स्टेडियम की लाइट्स भले बंद हो गईं, लेकिन अहमदाबाद का नया अंदाज़ अब जगमगा रहा है। अब हमें चुनना है—क्या ये सिर्फ एक रात का जादू था, या एक नई धुन की शुरुआत?

जब सपना ज़िद बन जाए: एक कलाकार की कहानी जो कर्ज़ को कला में बदल गया

कभी-कभी, एक छोटा-सा सपना इतना बड़ा हो जाता है कि वो न सिर्फ़ ज़िंदगी बदल देता है, बल्कि अपनों का भरोसा भी जीत लेता है। ये कहानी है चैन ज़ाओ की, जिन्होंने अपनी कलम से न सिर्फ़ 23 करोड़ का कर्ज़ चुकाया, बल्कि दुनिया को दिखाया कि जुनून और मेहनत से कुछ भी मुमकिन है।

वो लिखता गया, ज़िन्दगी बदलती गई

ज़िंदगी में एक पल ऐसा आता है, जब दिल कुछ कहता है और दुनिया कुछ और। चीन के वुहान शहर में जन्मे 31 वर्षीय चैन ज़ाओ के लिए ये पल तब आया जब वो सिर्फ़ पाँच साल के थे। उनकी छोटी-छोटी उंगलियाँ जब कलम पकड़ती थीं, तो कागज़ पर स्याही नहीं, सपने उभरते थे। कैलिग्राफी—चीन की वो प्राचीन कला, जो हर अक्षर में ज़िंदगी भर देती है—उनका पहला प्यार बन गई। मगर उनके मम्मी-पापा को ये सब बेकार लगता था। “कैलिग्राफी से क्या होगा, बेटा? बिज़नेस करो, पैसा कमाओ। इससे ज़िन्दगी नहीं चलती बेटा, ये कोई करियर नहीं है।” वो बार-बार कहते थे। जब चैन ने विश्वविद्यालय में विषय चुनना था, तो घरवालों ने व्यापार पढ़ने को कहा, पर उसने कैलिग्राफी को ही अपना रास्ता चुना।

दिल की स्याही, दुनिया की शंका

सपनों और शंकाओं की ये जंग आसान नहीं होती। चैन का दिल तो कलम के साथ नाचता था, पर दुनिया की बातें उन्हें बार-बार रोकती थीं। फिर भी, उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने ह्यूबेई इंस्टिट्यूट ऑफ़ फ़ाइन आर्ट्स में कैलिग्राफी चुनी। ये वो पल था जब उन्होंने अपने दिल की स्याही को दुनिया की शंका के खिलाफ़ खड़ा किया।

ज़िंदगी का सबक यही है—सपने तब तक सच नहीं होते, जब तक आप उन्हें सच न मानें। चैन ने अपने जुनून को चुना, भले ही रास्ता धुंधला था। उनकी कहानी हमसे पूछती है: क्या हम अपने दिल की आवाज़ सुनने की हिम्मत रखते हैं? या फिर दुनिया के शोर में उसे दबा देते हैं? हर सपना एक बीज है, और हर बीज को पनपने के लिए थोड़ा विश्वास चाहिए।

कर्ज़ का बोझ, मेहनत का आलम

2017 में चैन की ज़िंदगी में तूफ़ान आया। उनके मम्मी-पापा का कपड़ों का बिज़नेस डूब गया। कर्ज़? पूरे 23 करोड़ रुपये। ये वो बोझ था, जो किसी को भी तोड़ सकता था। ऊपर से उनके पापा की तबीयत खराब। चैन का दिल रो रहा था, पर उनकी कलम रुकी नहीं। उन्होंने अपने कैलिग्राफी स्टूडियो को और बड़ा किया। सुबह 8 बजे से रात 9 बजे तक, सिर्फ़ एक छोटा-सा ब्रेक लेकर, वो बच्चों को पढ़ाते थे। सपने तब भारी हो जाते हैं, जब वो सिर्फ़ आपके नहीं, अपनों के भी हो जाते हैं। चैन के लिए ये कर्ज़ सिर्फ़ पैसों का नहीं था—ये था अपने परिवार को फिर से खड़ा करने का वादा। उन्होंने ट्यूशन फीस बढ़ाई, कैलिग्राफी का सामान ऑनलाइन बेचा, और यहाँ तक कि एक टी-रूम भी खोला। हर कदम पर वो थकते थे, पर रुकते नहीं थे। उनके दोस्त कहते, “चैन, थोड़ा आराम कर लो, आप पीले पड़ रहे हो।” मगर चैन के लिए आराम का मतलब था अपने परिवार को कर्ज़ के साये से आज़ाद करना।



फ़लसफ़ा यही है—मेहनत वो आग है, जो काले पत्थर को हीरा बना देती है। चैन की कहानी सिखाती है कि मुश्किलें कितनी भी बड़ी हों, अगर इरादा पक्का हो, तो रास्ता बन ही जाता है। वो हमें याद दिलाते हैं कि हर बूंद पसीने में एक कहानी होती है, और हर कहानी में जीत की उम्मीद।

कलम की जीत, दिल का सुकून

धीरे-धीरे उसके छात्र बढ़ने लगे — 300 से अधिक नामांकन हुए। उसके शब्द, उसकी शैली, और उसका समर्पण एक मिसाल बन गया। सात साल।

इतना वक़्त लगा चैन को वो 23 करोड़ चुकाने में। सितंबर 2024 में, जब आखिरी किश्त चुकाई गई, तो चैन की आँखों में आँसू थे। मगर वो आँसू सिर्फ़ कर्ज़ खत्म होने की खुशी के नहीं थे। उसकी सबसे बड़ी जीत पैसों में नहीं थी — उसकी असली जीत थी उसके माता-पिता का बदलता हुआ दृष्टिकोण। जिन्होंने कभी उसकी कला को ‘वक़्त की बर्बादी’ कहा था, वही अब कहने लगे — “हाँ, ये कला सच में ज़िन्दगी बदल सकती है।” उनके शब्द चैन के लिए किसी खज़ाने से कम नहीं थे।



ज़िंदगी का असली सुकून पैसों में नहीं, अपनों के भरोसे में है। चैन ने न सिर्फ़ कर्ज़ चुकाया, बल्कि अपने सपनों को सही साबित किया। उनकी कैलिग्राफी अब सिर्फ़ कागज़ पर नहीं, बल्कि सैकड़ों बच्चों के दिलों में ज़िंदा थी। उनकी स्याही ने न जाने कितने बच्चों को अनुशासन और खूबसूरती का सबक सिखाया।

स्याही का सफ़र, ज़िंदगी का पैग़ाम

चैन ज़ाओ की कहानी कोई फ़िल्मी ड्रामा नहीं है। ये एक आम इंसान की असल जंग है, जो हमें बताती है कि सपने और मेहनत कभी बेकार नहीं जाते। उनकी स्याही ने न सिर्फ़ कर्ज़ चुकाया, बल्कि एक पुरानी कला को नई ज़िंदगी दी। कैलिग्राफी, जो कभी सिर्फ़ किताबों में सिमटी थी, आज चैन की वजह से सैकड़ों बच्चों की उंगलियों में नाचती है।

ज़िंदगी एक कागज़ है, और हम सबके पास अपनी-अपनी कलम। कभी-कभी स्याही कम पड़ती है, कभी कागज़ फट जाता है, मगर लिखना बंद नहीं करना चाहिए। चैन ने यही सिखाया—हर मुश्किल एक नया अक्षर है, और हर अक्षर एक नई शुरुआत। उनका सफ़र हमसे पूछता है: हम अपनी कहानी कैसे लिखेंगे? क्या हम अपनी स्याही को दुनिया के शोर से बचाएंगे? क्या हम हार मानने की बजाय एक और लाइन लिखने की हिम्मत करेंगे? चैन की कहानी में फ़लसफ़ा है, कविता है, और सबसे ज़्यादा—उम्मीद है। वो याद दिलाते हैं कि सपने वो नहीं जो सोते वक़्त देखे जाते हैं। सपने वो हैं, जो आपको सोने न दें। और जब आप उन सपनों के लिए जागते हैं, मेहनत करते हैं, तो वो न सिर्फ़ आपकी ज़िंदगी बदलते हैं, बल्कि दुनिया को भी एक नया रंग देते हैं।

मुंबई... सफलता... स्टारडम

वो चकाचौंध है यार कहीं तुम खो मत जाना... !
वो बिजली की इक कौंध यार

वो बादल की एक गरज यार
वो चमक मारती... गड़-गड़ करती

आज रवाँ
कल मुर्दा है...

और आज जवाँ
कल बूढ़ी है...

और आज हसीं
कल बदसूरत

और आज पास
कल दूरी है...

वो रेल की छुक-छुक जैसी है
जो दूर-दूर को जाते-जाते

बहुत दूर खो जाती है...
और धुन उसकी बस आस-पास की

पटरी पे रो जाती है...
वो कोहरे वाली रात को जाते

राहगरी के जूतों की
वैसी वाली-सी खट-खट है

जो दरवाजे के पास गुजरती
चौकाती...झकझोर मारती...

भरी नींद की तोड़ मारती
कानों से टकराती है...

और फिर इकदम
उस धुप्य अँधेरे

के अंदर घुस जाती है... !
वो बूढ़े चौकीदार की सूजी

थकन भरी आँखों में आई
नींद की वैसी झपकी है...

जो रात में पल-पल आती है...
पर मालिक की गाड़ी के तीखे

हॉर्न की चीखी पौं-पौं में
इक झटके में भग जाती है... !

वो भरी जवानी की बेवा की
आँख में बैठी हसरत है...

जो बाल खोल
उजली साड़ी में...

भरी महकती काया ले
सूनापन तकती जाती है...

जो कसक मारती... भरे गले में
फँसती-दबती मुश्किल से

बस इक पल को ही आ पाती है...
और दूजे पल ही

टूट पड़ी चूड़ी की छन्नक छन्न-छन्न से
बिखर-बिखर को जाती है... !

...खोज में जिसकी जाते हो
उसको इक पल... थोड़ा टटोल के

हाथ घुमा के... ज़रा मोड़ के
पैट के पिछले पॉकेट में भी

छूने की कोशिश करना... !
ऐसा ना हो कि खोज तुम्हारे अंदर ही बैठी
हो और बस...

किसी वजह से लुकी-छिपी हो... !
खोजे जाने के डर से शायद

तुमसे ही कुछ डरी-डरी हो... !
गर आँख खोल के देखोगे तो दिख जाएगी...

पर अँधे हो के देख लिया
तो याद हमेशा रखना ये

कि पास तुम्हारे आज अगर
तो कल तक के आते-आते

वो धुँधली भी हो सकती है
और परसों तक तो पक्का ही

हाथों से भी खो सकती है...
वो चकाचौंध है यार

कहीं तुम खो मत जाना...

जीना इसी का नाम है

पीयूष मिश्रा

दर-ब-दर की ठोकरी का लुत्फ पूछो क्या सनम
आवारगी को हमने तो अल्लाह समझ लिया... !

जिंदगी से बात की इक कश लिया फिर चल दिए
जिंदगी को धुएँ का छल्ला समझ लिया...

वक़्त से यारी हमारी जम नहीं पाई कभी
वो जो मिला हमको नहीं

बोला वो करता था यही...
कि संग चल ओ यार मेरे संग चल हाँ संग चल

तू छोड़ परवाह और कुछ बस संग चल बस संग चल...
हर आह मीठी हो पड़ेगी जो रहूँगा साथ मैं

हर राह सीधी हो पड़ेगी जो रहूँगा साथ मैं...
मैं पर्वतों के इस सिरे से उस सिरे तक ले चलूँ

कि जिस सिरे पे बैठने का ख़्वाब पाले बैठा तू !
पर क्या बताएँ हमको तो आदत ही कुछ ऐसी पड़ी

वो बात करता रास्तों की हम करे पगडंडी की...
वो जन्नतों की बात करता हम ये कह देते मियाँ

कि दोज़खों का भी लगे हाथों ना ले लें जायज़ा... ?
वो पक गया वो चट गया

फिर एक दिन बोला यही...
कि बिन मेरे तू क्या करेगा

तूने सोचा है कभी... ?
...अब हमने भी फिर जोर डाला थोड़ा-सा दिम्माग पर

और बोले क्यों ना कश लगा लें इक तुम्हारी बात पर...
होंठ के आगे ये अंगारा सुलग जो जाएगा

तो आग पे सोचेंगे सोचो लुत्फ आएगा...
वो बोला कि बस पंगा यही

ये आग मुझको दे दे तू
फिर जो कहेगा तेरे कदमों में पड़ा

है शर्त यूँ...
तो हम भड़क के हट लिए और हम कड़क के फट लिए

कि एक तो तूने हमें निठल्ला समझ लिया...
अरे सौदे हमने भी किए हैं जो हमें तूने यूँ ही

इक नातजुर्बेकार-सा दरल्ला समझ लिया...

बांग्लादेश में सत्ता का संग्राम

मोहम्मद यूनुस बनाम सेना प्रमुख

बांग्लादेश एक बार फिर राजनीतिक अस्थिरता के भंवर में फँस चुका है। शेख हसीना की सत्ता से विदाई को अभी दस महीने भी नहीं हुए हैं कि देश की अंतरिम सरकार जिसकी कमान नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस के हाथों में है, अब खुद संकट में घिर गई है। सेना प्रमुख जनरल वकार-उज़्ज़-ज़मान के सख्त तेवर, राजनीतिक दलों की नाराजगी और जनता में बढ़ती असंतोष की लहर ने यूनुस को इस्तीफा देने पर मजबूर कर दिया है।

इस लेख में हम जानेंगे कि कैसे हालात यहां तक पहुंचे, सेना और यूनुस के बीच टकराव की असली वजहें क्या हैं, क्या तख्तापलट की आहट सुनाई दे रही है, और क्या शेख हसीना की बांग्लादेश में फिर से वापसी संभव है?

सत्ता परिवर्तन की पृष्ठभूमि

जुलाई 2024 में बांग्लादेश में भारी विरोध-प्रदर्शनों के बाद शेख हसीना की सरकार को गिरना पड़ा। हिंसक प्रदर्शनों ने राजधानी ढाका से लेकर ग्रामीण इलाकों तक बांग्लादेश को हिला कर रख दिया। इन प्रदर्शनों की अगुवाई कर रहे छात्र संगठनों और विपक्षी पार्टियों ने 'तानाशाही शासन' के खिलाफ आवाज बुलंद की थी। अंततः शेख हसीना को इस्तीफा देकर भारत में शरण लेनी पड़ी। इसके बाद, अंतरिम सरकार के रूप में एक नया प्रशासन गठित हुआ, जिसकी अगुवाई मोहम्मद यूनुस कर रहे हैं। इस सरकार को शुरुआती दिनों में सेना, बीएनपी, जमात-ए-इस्लामी और छात्र नेताओं का समर्थन मिला।

मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार – उम्मीद से विरोध तक

यूनुस की सरकार को लेकर जनता और राजनीतिक दलों में शुरुआत में काफी आशा थी। वादा किया गया था कि देश में जल्द से जल्द शांति स्थापित होगी और लोकतांत्रिक चुनाव कराए जाएंगे। यूनुस ने अगस्त 2024 में शपथ लेते हुए कहा था, "मैं संविधान की रक्षा करूंगा और शांति के लिए कार्य करूंगा। हालांकि, समय के साथ मोहम्मद यूनुस पर NCP (नेशनल सिटिजन पार्टी) की तरफ झुकाव रखने का आरोप लगने लगा। NCP, जो छात्र नेताओं द्वारा बनाई गई थी, अब यूनुस के सबसे बड़े राजनीतिक सहयोगी माने जा रहे हैं। इस बात से बीएनपी और अन्य पारंपरिक राजनीतिक दल नाराज हैं, क्योंकि उन्हें सरकार के अहम निर्णयों से बाहर रखा जा रहा है।

सेना और सरकार के बीच बढ़ता तनाव

वास्तविक टकराव तब सामने आया जब सेना प्रमुख जनरल वकार ने सार्वजनिक रूप से कहा कि बांग्लादेश को "चुनी हुई सरकार" की जरूरत है, न कि "बिना जनादेश वाली अंतरिम व्यवस्था" की। उन्होंने दिसंबर 2025 तक चुनाव कराने की बात कही, जबकि यूनुस ने 2026 तक चुनाव टालने की मंशा जताई। म्यांमार के राखिन प्रांत में एक मानवीय गलियारा खोलने के प्रस्ताव पर जनरल वकार ने कहा, बांग्लादेश की संप्रभुता सौदेबाजी का विषय नहीं है। विदेशी कंपनियों को सौंपे गए निर्णय: जैसे चटगांव पोर्ट का प्रबंधन विदेशी कंपनी को देना और स्टारलैंक को अनुमति देना। सेना का कहना है कि ये



निर्णय एक निर्वाचित सरकार ही ले सकती है। इसके बाद यूनुस और सेना के रिश्ते बिगड़ते चले गए।

क्या यूनुस इस्तीफा देंगे या भागेंगे?

20 मई 2025 को एक बंद कमरे में यूनुस और सेना प्रमुखों के बीच बैठक हुई। इसके तुरंत बाद यूनुस ने अपने सलाहकारों से कहा कि वे इस्तीफे पर विचार कर रहे हैं। हालांकि, यूनुस के समर्थक और कुछ सलाहकार इसे एक "भावनात्मक बयान" कह रहे हैं। यदि वे इस्तीफा देते हैं और देश छोड़ते हैं, तो उनके संभावित गंतव्य हो सकते हैं।

क्या तख्तापलट की आहट है?

बांग्लादेश में सेना का इतिहास तख्तापलटों से भरा रहा है। हालिया रिपोर्ट्स के अनुसार, सेना ने कई क्षेत्रों में गश्त बढ़ा दी है और ढाका में बख्तरबंद गाड़ियाँ देखी जा रही हैं। पिछले कुछ महीनों में सेना ने लगभग 10,000 लोगों को हिरासत में लिया है। NCP के पूर्व सलाहकार नाहिद इस्लाम ने चेतावनी दी है कि बांग्लादेश में "1/11 स्टाइल" की सैन्य समर्थित सरकार उभर सकती है। हालांकि, जनरल वकार को भारत समर्थक और लोकतंत्र समर्थक माना जाता है। उन्होंने ले. जनरल फैजुर रहमान की उस साजिश को भी नाकाम किया जिसमें उन्हें हटाने की योजना बनाई गई थी। इस साजिश में ISI की भूमिका भी बताई गई है।

पूर्व PM शेख हसीना की प्रतिक्रिया

हसीना ने हाल ही में फेसबुक पर तीखा हमला करते हुए लिखा, "यूनुस ने आतंकियों के साथ मिलकर सत्ता हथियाई है। वह बांग्लादेश को अमेरिका को बेच रहे हैं। हमारे संविधान को छूने का अधिकार उन्हें किसने दिया?"

क्या फिर से लौटेगी शेख हसीना?



उन्होंने यह भी कहा कि यूनुस सरकार ने अवामी लीग पर प्रतिबंध लगाकर लोकतंत्र को खत्म कर दिया है।

क्या शेख हसीना की वापसी संभव है?

शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग के नेताओं का कहना है कि लोकतंत्र बहाल होते ही हसीना लौटेंगी। यूएस में पार्टी की उपाध्यक्ष रब्बी आलम ने मार्च 2025 में कहा था कि हसीना फिर प्रधानमंत्री बनेंगी। राजनीतिक विश्लेषक माइकल कुगेलमैन के अनुसार, दक्षिण एशिया की वंशवादी राजनीति में वापसी कभी भी असंभव नहीं होती। लेकिन स्थानीय विशेषज्ञ जिल्लुर रहमान मानते हैं कि फिलहाल हसीना की राजनीति में वापसी मुश्किल है जब तक यूनुस सरकार पूरी तरह फेल न हो जाए।

बांग्लादेश के लोकतंत्र की अग्निपरीक्षा

मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार अब एक चौराहे पर खड़ी है। एक ओर जनरल वकार जैसे शक्तिशाली सैन्य नेता हैं, जो लोकतांत्रिक चुनाव की मांग कर रहे हैं। दूसरी ओर यूनुस हैं, जिन पर सत्ता में बने रहने के लिए चुनाव टालने का आरोप है। सवाल यह है कि क्या बांग्लादेश फिर से सैन्य हस्तक्षेप की ओर बढ़ रहा है? क्या मोहम्मद यूनुस देश छोड़ देंगे? और क्या शेख हसीना लोकतांत्रिक विकल्प के तौर पर वापसी करेंगी? इन सवालों का जवाब आने वाले कुछ महीनों में मिल सकता है, लेकिन इतना तय है कि बांग्लादेश एक और राजनीतिक तूफान की दहलीज पर खड़ा है।

डाई-2-एथिलहेक्सिल फ्थालेट का छिपा खतरा

हर सुबह, जब आप शैंपू से बाल धोते हैं, प्लास्टिक की बोतल से पानी पीते हैं, या बाजार से पैक खाना खाते हैं, क्या आप सोचते हैं कि आपके घर में छिपा एक दुश्मन आपकी सेहत को धीरे-धीरे नुकसान पहुंचा रहा है? ये दुश्मन है डाई-2-एथिलहेक्सिल फ्थालेट (DEHP), एक ऐसा केमिकल जो प्लास्टिक को लचीला बनाता है और हमारे शैंपू, पर्दों, खाने की पैकिंग, और मेडिकल ट्यूब्स में मौजूद है। 2025 की ताजा रिसर्च कहती है कि DEHP की वजह से 2018 में 3,56,238 लोग दिल की बीमारी से मरे, और भारत में ये आंकड़ा सबसे ज्यादा था। ये सिर्फ आंकड़े नहीं, हमारे अपने परिवारों की कहानियां हैं।

अनदेखा जहर: DEHP क्या है?

प्रिया, 60 साल की, दिल्ली की एक आम औरत। हर दिन वो अपने किचन में प्लास्टिक के डिब्बों में दाल-चावल रखती है, बाजार से प्लास्टिक में पैक दूध लाती है, और अपने पुराने विनाइल पर्दों को साफ करती है। उसे नहीं पता कि इन चीजों में DEHP है—एक ऐसा केमिकल जो प्लास्टिक को मुलायम बनाता है, लेकिन शरीर में घुसकर हार्मोन्स को बिगाड़ता है। ये हार्मोन्स हमारे शरीर के कंट्रोलर हैं, जैसे गाड़ी का स्टीयरिंग। अगर ये बिगड़ जाएं, तो दिल की बीमारी, कैंसर, और बच्चों के दिमाग पर असर पड़ सकता है।

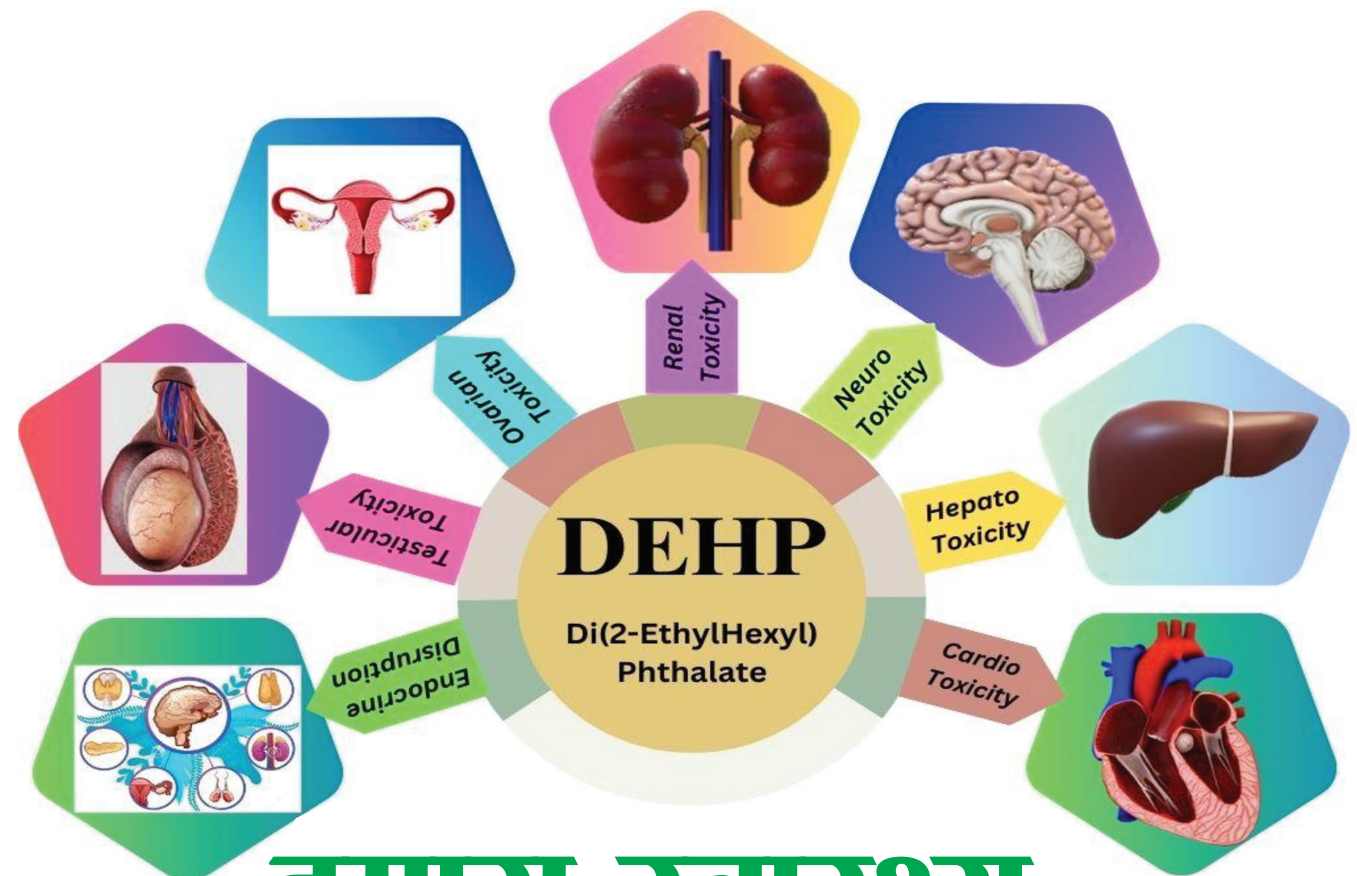
2025 की eBioMedicine स्टडी कहती है कि DEHP दिल में सूजन पैदा करता है, जिससे नसें ब्लॉक हो जाती हैं। इससे 55-64 साल के लोगों में दिल का दौरा पड़ने का खतरा बढ़ता है। भारत में ये खतरा सबसे ज्यादा है, क्योंकि हमारे घरों में प्लास्टिक हर जगह है—खाने की पैकिंग से लेकर मेडिकल ट्यूब्स तक। एक और स्टडी (BMC Public Health, 2024) ने पाया कि DEHP से प्रोस्टेट और ब्रेस्ट कैंसर का रिस्क भी बढ़ता है। सबसे डरावनी बात? 2025 की एक रिसर्च बताती है कि गर्भवती औरतों के बच्चों के दिमाग पर DEHP बुरा असर डाल सकता है।

क्या ये जहर सिर्फ प्रिया की कहानी है, या हम सबकी? हमारी जिंदगी में प्लास्टिक इतना घुल-मिल गया है कि हम इसे देखते ही नहीं। लेकिन क्या अनदेखा करना सही है? जैसे भगवद् गीता में अर्जुन को युद्ध के लिए तैयार होने को कहा गया, वैसे ही हमें अपने स्वास्थ्य के लिए जागना होगा।

भारत का बोझ: क्यों हम सबसे ज्यादा खतरे में?

भारत में DEHP से होने वाली मौतें सबसे ज्यादा हैं। eBioMedicine की स्टडी कहती है कि 2018 में दक्षिण एशिया, खासकर भारत, में DEHP से जुड़ी 75% मौतें हुईं। क्यों? क्योंकि हमारे यहां प्लास्टिक हर जगह है—सस्ते डिब्बों से लेकर पानी की बोतलों तक। नियम-कायदे कमजोर हैं, और जागरूकता और भी कम। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी दी कि DEHP पानी के स्रोतों में भी मिल रहा है, जो हमारे खाने और पीने की चीजों में घुस जाता है।

प्रिया की तरह, भारत के शहरों में लोग हर दिन बिना सोचे प्लास्टिक का इस्तेमाल करते हैं। दिल्ली, मुंबई जैसे शहरों में विनाइल फ्लोरिंग, प्लास्टिक पैकिंग, और सस्ते कॉस्मेटिक्स आम हैं। लेकिन ये सस्तापन महंगा पड़ रहा है। भारत में दिल की बीमारी पहले से ही बड़ी समस्या



हमारा स्वास्थ्य, हमारा भविष्य

है—खराब खानपान, तनाव, और हवा का प्रदूषण इसे और बढ़ाते हैं। DEHP इस आग में घी डालने का काम करता है।

दूसरी तरफ, कनाडा ने DEHP को कम करने में कामयाबी पाई। वहां 2007 से 2019 तक DEHP का लेवल 77% कम हुआ, क्योंकि सरकार ने सख्त नियम बनाए। लेकिन भारत में ऐसा क्यों नहीं? क्या हमारी सेहत की कीमत इतनी सस्ती है? ये सवाल हमें खुद से पूछना होगा। जैसे कबीर ने कहा, “बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय। जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।” हमें अपने समाज, अपने नियमों, और अपने घरों को खंगालना होगा।

रास्ता है: जागरूकता और बदलाव

क्या DEHP से बचना मुमकिन है? हां, अगर हम जागरूक हों और छोटे-छोटे कदम उठाएं। प्रिया ने जब अपनी बीमारी के बारे में डॉक्टर से बात की, तो उसे पता चला कि वो अपनी जिंदगी को बेहतर कर सकती है। उसने प्लास्टिक के डिब्बों को कांच और स्टील से बदल दिया। उसने बिना खुशबू वाले शैंपू और साबुन खरीदना शुरू किया, क्योंकि खुशबू में अक्सर DEHP होता है। उसने अपने घर की हवा को साफ रखने के लिए खिड़कियां खोलना शुरू किया। आप भी ऐसा कर सकते हैं। कुछ आसान टिप्स:

प्लास्टिक को गरम न करें: खाना माइक्रोवेव में प्लास्टिक के डिब्बे में न गरम करें, क्योंकि गर्मी से DEHP खाने में घुल जाता है।

DEHP-फ्री प्रोडक्ट्स: शैंपू, लोशन, और कॉस्मेटिक्स पर “phthalate-free” लेबल देखें। EWG की Skin Deep वेबसाइट पर चेक करें कि प्रोडक्ट सेफ है या नहीं।

कांच और स्टील: खाने और पानी के लिए कांच या स्टील की बोतलें यूज करें।

हवा साफ रखें: घर में विनाइल फ्लोरिंग या पर्दे हों, तो हवा को ताजा रखने के लिए पंखे या खिड़कियां यूज करें।

गर्भवती औरतें सावधान: बिना खुशबू वाले प्रोडक्ट्स यूज करें और हॉस्पिटल में DEHP-फ्री ट्यूब्स मांगें।

लेकिन सिर्फ हमारी कोशिशें काफी नहीं। सरकार को चाहिए कि DEHP पर सख्त बैन लगाए, जैसे यूरोप और अमेरिका ने किया। जापान ने 2002 में बच्चों के फीडिंग ट्यूब्स से DEHP हटा दिया था—हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते? हमें ब्रैंड्स से सवाल पूछना होगा, पॉलिसी मेकर्स को लेटर लिखना होगा। CHEM Trust जैसी संस्थाएं कहती हैं कि 2030 तक हानिकारक केमिकल्स को हटाना मुमकिन है।

भविष्य की उम्मीद: हमारी जिम्मेदारी

कल्पना करें: प्रिया का परिवार अब कांच की बोतलों से पानी पीता है, उनके घर में ताजी हवा आती है, और वो DEHP-फ्री शैंपू यूज करते हैं। ये छोटे बदलाव उनकी सेहत को बचा रहे हैं। लेकिन ये कहानी सिर्फ प्रिया की नहीं—ये हम सबकी है। DEHP का खतरा असली है, लेकिन इसका हल भी हमारे हाथ में है। 2025 में अमेरिका की EPA DEHP पर नई गाइडलाइंस बना रही है। यूरोप और कनाडा पहले ही आगे हैं। भारत को भी ये रास्ता अपनाना होगा। लेकिन बदलाव सिर्फ सरकार का काम नहीं—हमारी जिम्मेदारी है कि हम जागरूक बनें, सही प्रोडक्ट्स चुनें, और अपने बच्चों के लिए बेहतर भविष्य बनाएं।

क्या हम अपने घरों को जहर से मुक्त कर सकते हैं? क्या हम वो समाज बना सकते हैं जहां सेहत पहले हो, न कि सस्तापन? ये सवाल हमारी अंतरात्मा से हैं। जैसे रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा, “जहां मन भय से मुक्त हो, वहां सिर ऊंचा हो।” आइए, अपने स्वास्थ्य के लिए, अपने भारत के लिए, वो कदम उठाएं।

धोनी का उत्तराधिकारी कौन?

@ मोहित प्रजापति

इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) के 18वें सीजन में चेन्नई सुपर किंग्स (CSK) का सफर इस बार बेहद निराशाजनक रहा। पांच बार की चैंपियन टीम 10 में हार के साथ सबसे नीचे अंक तालिका में रही और प्लेऑफ की रेस से सबसे पहले बाहर होने वाली पहली टीम बन गई।

हालांकि, रविवार को जब



एमएस धोनी आखिरी लीग मुकाबले में गुजरात टाइटंस के खिलाफ टॉस के लिए उतरे, तो पूरा क्रिकेट जगत बस एक सवाल में उलझा था, क्या ये बतौर खिलाड़ी धोनी का आखिरी मुकाबला था?

धोनी ने इस पर सीधे तौर पर कुछ नहीं कहा। उनका जवाब था, मैं अभी रांची जाने के लिए उत्सुक हूँ... रिटायरमेंट पर सोचने के लिए मेरे पास काफी समय है।

लेकिन इस बीच भारत के पूर्व क्रिकेटर मुरली कार्तिक ने इस बहस को एक नई दिशा दी है। उनका मानना है कि अब धोनी को अपने आईपीएल करियर से विदाई ले लेनी चाहिए।

हर अध्याय का अंत होता है — मुरली कार्तिक

दुनिया धोनी से बेहद प्यार करती है, लेकिन कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिनका अंत होना तय है।

कभी-कभी हम उन लम्हों को पकड़ कर रखना चाहते हैं, जो हमें प्रिय हैं, लेकिन हर खिलाड़ी को एक दिन जाना ही

होता है। कार्तिक ने आगे कहा, "अब जब विराट कोहली भी टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं, तो सवाल उठता है कि क्या धोनी को भी अब पीछे हट जाना चाहिए। धोनी को लेकर अंदाजा लगाना मुश्किल है, वो हमेशा अपने फैसलों को रहस्य बनाकर रखते हैं।"

धोनी का प्रदर्शन रहा फीका

इस सीजन में धोनी का प्रदर्शन भी उम्मीदों के अनुरूप नहीं रहा। वह कई मौकों पर मैच फिनिश करने में असफल रहे। जहां पहले उनके शांत स्वभाव और फिनिशिंग क्षमता की तारीफ होती थी, वहीं इस बार उनके बल्ले से ज्यादा शॉट्स नहीं निकल सके ऐसे में धोनी का आगे खेलना टीम के लिए सिर्फ भावनात्मक निर्णय बन सकता है, व्यावहारिक नहीं।

क्या कप्तानी में लौट सकते हैं धोनी ?

एक प्रशंसक ने मुरली कार्तिक से पूछा कि क्या धोनी अगले साल फिर से कप्तानी करते नजर आ सकते हैं? इस पर उन्होंने स्पष्ट कहा, अब कप्तानी की जिम्मेदारी रुतुराज गायकवाड़ को सौंप दी गई है। ऐसे में उन्हें समय देना जरूरी है ताकि वह टीम को अपना बना सकें। मैं नहीं मानता कि फ्रेंचाइजी फिर से कप्तानी धोनी को सौंपेगी। गायकवाड़ को इस सीजन में कप्तानी का अनुभव मिला और उन्होंने संयम से टीम को लीड किया, भले ही

परिणाम टीम के पक्ष में न रहे हों।

धोनी का उत्तराधिकारी

धोनी के जाने के बाद उनकी जगह कौन लेगा, ये सवाल अब हर फैन के मन में है। इस पर मुरली कार्तिक का नजरिया साफ है। धोनी जैसे खिलाड़ी की जगह कोई नहीं ले सकता। हमें नए खिलाड़ियों को अपनी पहचान खुद बनाने देनी चाहिए। उनसे 'धोनी बनने' की उम्मीद करना सही नहीं है। धोनी के अंदर मैदान पर जो शांत दृढ़ता थी, जो निर्णय लेने की क्षमता थी, और जो 'फिनिशिंग टच' था। वह हर खिलाड़ी में नहीं आ सकता। ऐसे में टीम मैनेजमेंट को धोनी की जगह भरने की बजाय नए चेहरों को निखारने पर ध्यान देना चाहिए।

क्या वाकई यह था आखिरी मुकाबला ?

धोनी ने रिटायरमेंट पर सीधे कुछ नहीं कहा, लेकिन उनके चेहरे के भाव और टॉस के समय मैदान पर दर्शकों की भावनाएं कुछ और बयां कर रही थीं। हर किसी को बस एक संकेत चाहिए कि "थाला" अब मैदान को अलविदा कहने वाले हैं।

उन्होंने IPL 2023 में भी संकेत दिए थे कि वह एक साल और खेलेंगे, और उन्होंने किया भी। लेकिन IPL 2025 के लिए वह खुद को कितना तैयार महसूस करते हैं, यह अब पूरी तरह उनके फैसले पर निर्भर करता है।

आखिर शुभमन गिल को ही टेस्ट टीम की कमान क्यों ?

@ सचिन कुमार

भारतीय क्रिकेट के युवा सितारे शुभमन गिल को अब एक नई जिम्मेदारी सौंपी गई है। वह भारत की टेस्ट टीम के 37वें कप्तान होंगे और

इस नई भूमिका की शुरुआत वह इंग्लैंड दौरे से करेंगे। कप्तानी के इस दौड़ में जहां केएल राहुल, ऋषभ पंत और जसप्रीत बुमराह जैसे बड़े नाम थे, वहीं अंत में बोर्ड ने गिल पर भरोसा जताया। लेकिन इस फैसले के पीछे कौन था? यह सवाल पिछले कुछ दिनों से चर्चा में था। अब जो खुलासा हुआ है, वो चौकाने वाला है वो इस निर्णय के पीछे न तो गौतम गंभीर थे और न ही कोई सीनियर सिलेक्टर, बल्कि यह सुझाव आया टीम इंडिया के पूर्व हेड कोच राहुल द्रविड़ की तरफ से।

गंभीर नहीं, 'दी वॉल' की थी रणनीति

हालांकि कयास लगाए जा रहे थे कि टीम इंडिया के मौजूदा हेड कोच गौतम गंभीर ने बीसीसीआई को गिल के नाम पर राजी किया, लेकिन Hindustan Times की रिपोर्ट ने इस अनुमान पर विराम लगा दिया। रिपोर्ट के अनुसार, गिल को कप्तान बनाने का फैसला राहुल द्रविड़ की सिफारिश पर लिया गया, जिन्होंने गिल की लीडरशिप क्वालिटी को बेहद प्रभावशाली बताया। एक बीसीसीआई अधिकारी के हवाले से बताया गया कि जब चयनकर्ताओं ने अगला टेस्ट कप्तान चुनने के लिए चर्चा की, तो उन्होंने गिल और पंत के नाम पर विचार किया। इसके बाद राहुल द्रविड़ से उनकी राय मांगी गई। द्रविड़ ने गिल की लीडरशिप एबिलिटी, मैच सेंस और संयमित व्यवहार की तारीफ करते हुए उन्हें भविष्य के लिए उपयुक्त विकल्प बताया।

बुमराह और पंत क्यों नहीं बने कप्तान ?

कप्तानी की रेस में जसप्रीत बुमराह भी एक समय

सबसे आगे थे। लेकिन वर्कलोड मैनेजमेंट और मेडिकल टीम की सिफारिशों के चलते उन्हें इस भूमिका से बाहर रखा गया। दूसरी ओर, ऋषभ पंत भी एक संभावित नाम थे, लेकिन उनके खेल में निरंतरता और लंबे समय तक चोट के कारण वे चयनकर्ताओं को पूरी तरह आश्वस्त नहीं कर सके।

गिल और द्रविड़ का जुड़ाव: एक दशक पुराना रिश्ता

इस फैसले की सबसे दिलचस्प बात यह है कि शुभमन गिल और राहुल द्रविड़ का रिश्ता कोई नया नहीं है। यह 2017 में शुरू हुआ था, जब गिल भारतीय अंडर-19 टीम का हिस्सा थे और कोच की भूमिका में थे राहुल द्रविड़। इसी संयोजन ने भारत को अंडर-19 वर्ल्ड कप जितवाया। गिल ने 2019 में सीनियर टीम में कदम रखा, और द्रविड़ 2021 में टीम इंडिया के हेड कोच बने। पिछले तीन सालों में दोनों ने एक बार फिर साथ काम किया, और द्रविड़ ने गिल के भीतर कप्तान बनने की छिपी हुई क्षमता को नजदीक से देखा और परखा।

आंकड़े नहीं, दृष्टिकोण बना कप्तानी का आधार

गौरतलब है कि शुभमन गिल का टेस्ट औसत 35 के आसपास है, जो कई दिग्गजों के मुकाबले ज्यादा प्रभावशाली नहीं लगता। फिर भी उन्हें कप्तानी क्यों दी गई? इसका जवाब

द्रविड़ के शब्दों में छिपा है, गिल में सिर्फ एक बल्लेबाज नहीं, एक सोचने वाला कप्तान है। वो परिस्थिति पढ़ता है, टीम को महसूस करता है, और शांत दिमाग से फैसले करता है।

बीसीसीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने



कहा, राहुल द्रविड़ ने उन्हें अंडर-19 से लेकर सीनियर टीम तक देखा है। वह जानते हैं कि गिल केवल खेल नहीं, टीम को भी संभाल सकते हैं। यही कारण है कि सेलेक्टरों ने उनकी बात पर भरोसा किया।

अब क्या उम्मीदें ?

अब जबकि शुभमन गिल को टेस्ट टीम की कमान सौंपी जा चुकी है, उनसे उम्मीदें भी उतनी ही बड़ी होंगी। उन्हें केवल रन ही नहीं बनाने, बल्कि नई पीढ़ी की टेस्ट क्रिकेट में दिशा तय करने की जिम्मेदारी दी गई है। अजिंक्य रहाणे और विराट कोहली की कप्तानी के दौर के बाद, गिल एक ऐसे कप्तान के रूप में उभर सकते हैं जो न केवल शांतचित्त हैं, बल्कि क्रिकेटिंग ब्रेन और तकनीकी समझ में भी अव्वल हैं।

गिल की कप्तानी का भविष्य कैसा होगा ?

शुभमन गिल की कप्तानी भारत के क्रिकेट भविष्य का संकेत हो सकती है। यह बदलाव सिर्फ एक खिलाड़ी के नाम का नहीं, बल्कि सोच की परिपक्वता और पीढ़ी के बदलाव का संकेत है। राहुल द्रविड़ की निगरानी में तैयार हुआ यह खिलाड़ी अब उसी प्रणाली की बागडोर संभालने जा रहा है, जिससे वह निकला है।

अब देखना यह है कि क्या गिल 'द्रविड़ स्कूल ऑफ क्रिकेट' की सीख को मैदान पर कप्तानी के रूप में उतार पाएंगे या नहीं। लेकिन एक बात तय है बोर्ड और द्रविड़ ने जो बीज बोया है, वह अब भारतीय टेस्ट क्रिकेट की नई शाखाएं बना सकता है।



प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

Arihanta Industries

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE
HAIR
SOLUTION**

NO

ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries